राष्ट्रीय विचारों का पाक्षिक

₹10

पाथेय कण

www.patheykan.com

वैशाख शुक्ल 11, वि. 2080, युगाब्द 5125, 1 मई, 2023

डॉ. अम्बेडकर के शब्दों में भीम-मीम एकता की सच्चाई

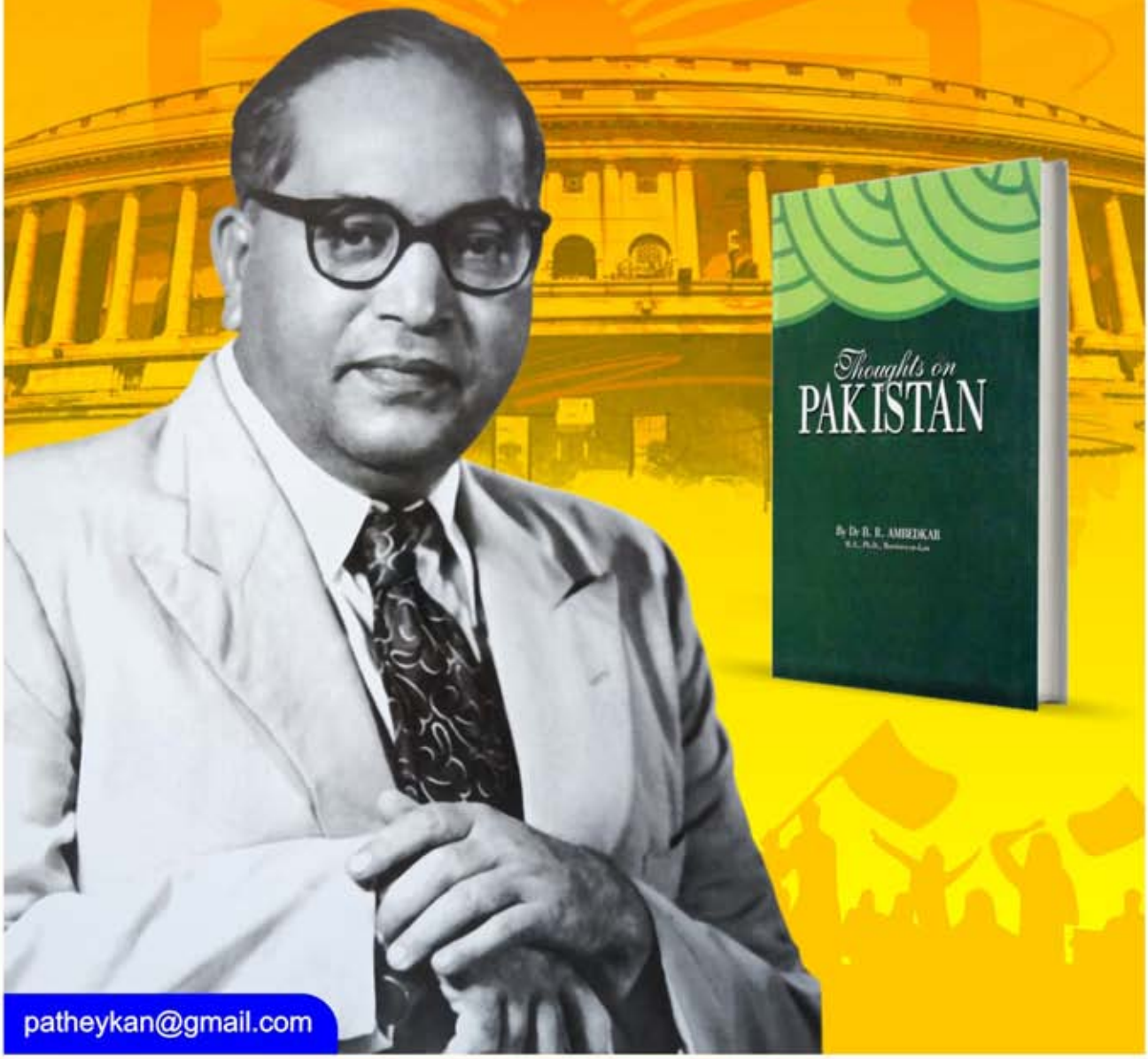

patheykan@gmail.com

गावो विश्वस्य मातरः

पाथेय कण का एक मार्च का अंक गौ माता को समर्पित था। गाय को लेकर दी गई जानकारी पाठक को सीधे-सीधे गाय के सामने ला खड़ा करती है। संघ द्वारा गो सेवा के लिए कार्यों की जानकारी देने के साथ-साथ , गाय के समग्र जीवन और मानव जीवन की कृतार्थता के लिए उसके महत्व का सांगोपांग विवरण दिया है। गो संवर्धन द्वारा समाज हित के लिए हो रहे कार्यों की जानकारी 18 शीर्षकों के अन्तर्गत दी गई है। हर आदमी ने अमृत, पारस और कल्पवृक्ष के बारे सुन तो रखा है ,पर इन्हें किसी ने देखा नहीं है। जीवन को अमरता (अमृत), संपन्नता (पारस) और परम सामर्थ्य (कल्पवृक्ष) प्रदान करने वाली किसी एक चीज की जानकारी करनी हो तो पाथेय कण के इस अंक को पढ़ना चाहिए। शंकरलाल जी गाय के बारे में जानकारी के लिए आज के ज्ञान कोष हैं। उन्होंने अमृत,पारस और कल्पवृक्ष के साक्षात साकार स्वरूप गाय का ज्ञान इस बातचीत में कराया है। जिसके प्रकाशन के लिए पाथेय कण और उसके सुधि संपादक जी का आभार।

-श्रीराम शर्मा, खाचरियावास, सीकर

लाभकारी जानकारी

पाथेय कण का मैं नियमित पाठक हूं। हमारी संस्कृति और अपने देश के बारे में

बहुत अच्छी जानकारी इसमें पढ़ने को मिलती है। 1 मार्च के अंक में गौ माता के महत्व व पालने के लाभों की विस्तृत जानकारी मिली।

झुंझुनूं के एक गांव के नव विवाहित जोड़े ने बलिदानियों को नमन की नई परम्परा चलाने का जो मार्ग दिखाया, वास्तव में सराहनीय कदम है। ऐसी नवीन जानकारी देने के लिए और दिलों में देश प्रेम जगाने के लिए पाथेय कण का बहुत-बहुत आभार।

- ललित चराया, श्रीगंगानगर

समरसता की आवश्यकता

पाथेय कण 16 मार्च के अंक में सामाजिक समरसता को मजबूत करने वाले

कुछ समाचार पढ़े। सनातन धर्म में एक दूसरे को सम्मान देना, एक-दूसरे के विवाह या अन्य मौके पर परस्पर सहकारिता निभाना आदि प्राचीन काल से चला आ रहा था। देश में जब विदेशी और विधर्मी शासक आए तो उन्हें लगा कि इनकी सहकार की भावना हमें यहां राज करने नहीं देगी तब उन्होंने हमारे सनातन धर्म में जातिगत खाई डालनी शुरू की और उसमें वे सफल भी हुए। आज समाज ने पुनः सामाजिक समरसता की आवश्यकता को समझा है जो निश्चित ही सनातन संस्कृति के लिए कल्याणकारी सिद्ध होगी ।

- बलवंतसिंह खाराबेरा, चेन्नई

सामूहिक वाचन

पाथेय कण पत्रिका का मैं पिछले 6 वर्षों से नियमित पाठक हूं। पत्रिका का वाचन मेरे साथ-साथ गांव के युवाओं में भी होता है। मेरे गांव के युवा नियमित वाचन कर सत्य को जान रहे हैं। इसकी उपयोगिता को समझकर आगामी समय में अन्य युवाओं तक इस पत्रिका को पहुंचाने का लक्ष्य हम सबने मिलकर रखा है।

-हिमेश सुथार, सागवाड़ा

पठनीय साक्षात्कार

पाथेय कण के 1 मार्च के अंक में वरिष्ठ प्रचारक आदरणीय शंकरलाल जी का साक्षात्कार पढ़ा, जो बहुत ही प्रभावशाली, ज्ञानवर्धक व मन को छू लेने वाला है। गाय के बारे में इतनी विस्तार से जानकारी देने के लिए पाथेय कण को कोटि कोटि साधुवाद,सादर प्रणाम।

- जगमाल सिंह राठौड़, हाथीदेह,सीकर

सोशल मीडिया से साभार

अनुकरणीय

1 मार्च के अंक में राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय रेवत,जालोर के विद्यालय में जन्मदिन मनाने की अनूठी परम्परा की जानकारी पढ़ी। आज के समय जब अधिकतर भारतीय पाश्चात्य संस्कृति को अपनाकर केक व मोमबत्तियां जलाना आदि करते हैं वहां इस विद्यालय की उक्त पहल अनुकरणीय है। इस प्रकार की पहल बच्चों में अपनी संस्कृति के प्रति लगाव का एक अच्छा माध्यम है, यह इस बात को सिद्ध करता है कि यदि विद्यालय शिक्षक चाहे तो भारतीय संस्कृति को बनाए रखने में एक अच्छी भूमिका निभा सकते हैं।

-संध्या सिंघल,
sandhyasinghal1996@gmail.com

सूचना

पाथेय कण सदस्यता अभियान (वर्ष 2023-24) में जिस व्यक्ति/शाखा ने पाथेय कण के 100 से अधिक सदस्य बनाएं है, उन्हें पुरस्कृत किया जायेगा। कृपया संबंधित व्यक्ति अपनी जानकारी कार्यालय को शीघ्र भेजें।

पाथेय कण पोर्टल पर पढ़ें

(दिए गए लिंक पर क्लिक करें)

- समलैंगिक विवाह घातक
  https://patheykan.com/?p=20202
- अंग्रेज चले गए, अंग्रेजियत नहीं गई
  https://patheykan.com/?p=20177
- भगवान पशुराम अवतार दिवस .....
  https://patheykan.com/?p=20184

पाक्षिक
पाथेय कण

वैशाख शुक्ल 11 से
ज्येष्ठ कृष्ण 11 तक
विक्रम संवत् 2080,
युगाब्द 5125

1-15 मई, 2023
वर्ष : 39
अंक : 02

सम्पादक
रामस्वरूप अग्रवाल

सह सम्पादक
मनोज गर्ग

सहयोग
संजय सुरोलिया
हेमलता चतुर्वेदी

प्रबंध सम्पादक
माणकचन्द

सह प्रबंध सम्पादक
ओमप्रकाश

अक्षर संयोजन
कौशल रावत

सहयोग राशि
एक वर्ष ₹150/-
पन्द्रह वर्ष ₹1500/-

प्रबंधकीय कार्यालय
'पाथेय भवन'
4, मालवीय संस्थानिक क्षेत्र, अग्रसेन मार्ग, मालवीय नगर, जयपुर-17 (राज.)

पाथेय कण प्राप्त नहीं होने पर व्हाट्सएप करें अथवा फोन करें।
(प्रातः10 से सायं 5 बजे तक)
7976582011

प्रेषण विभाग
9413645211

E-mail
patheykan@gmail.com
Website
www.patheykan.in

कौन थे अपने? इस भारत के अपने ?

मुगलों ने भारत पर आक्रमण किया था,यह सत्य है या नहीं? इन आक्रमणकारियों से भारत की रक्षा करने वाले कौन थे? इतिहास बताता है कि इन मुगल आक्रांताओं से राणा कुंभा, पृथ्वीराज चौहान,मिहिर भोज प्रतिहार सहित चौहान और प्रतिहार वंश के शासकों ने लगातार मुकाबला किया। राणा सांगा ने 16वीं शताब्दी में मुगलों के विरुद्ध युद्ध किया। मारवाड के राजा मालदेव राठौड़ ने खानवा के युद्ध में राणा सांगा के साथ आक्रांताओं के विरुद्ध लड़ाई लड़ी। तो, तथ्य यही है न कि मुगलों ने भारत पर आक्रमण किया था और भारत के राजा-महाराजाओं, योद्धाओं ने उनको भारत में प्रवेश से रोकने के लिए युद्ध किया?

यह सच है कि मुगल भारी पड़े। मुगलों द्वारा भारत पर कब्जा करने के बावजूद भारत के योद्धा उनसे संघर्ष करते रहे। मुगलों से महाराणा प्रताप, महाराणा अमर सिंह, छत्रपति शिवाजी महाराज लड़ते रहे। मारवाड़ के राजा चंद्रसेन राठौड़ तथा मराठों ने भी 20 वर्षों तक मुगलों के विरूद्ध संघर्ष किया। बुंदेल महाराजा छत्रसाल, दुर्गादास राठौड़, बंदा सिंह बहादुर, सिख गुरू गोविंद सिंह, गोकुल व राजाराम जाट आदि ने मुगलों के विरूद्ध लड़ाइयां लड़ी।

वामी और श्यूडो सेक्युलर तर्क देते हैं कि मुगल भले ही बाहर से आए थे,परंतु वे यहीं, इस देश में रह गए, इस देश के हो गए थे। श्रीमान, मुगल भारत के बाहर से पैदल चल कर नहीं आए थे। उन्होंने भारत, हमारी मातृभूमि पर आक्रमण किया था। भारत को बचाने के लिए हजारों वीरों ने कुर्बानियां दी थीं। तो कौन हुए अपने? मुगल इस देश के कैसे हो गए? और फिर, मुगलों का शासन स्थापित हो जाने पर कौन इस देश में सनातन काल से रहने वाले लोगों का तलवार के बलबूते धर्मांतरण कर रहा था? किसने यहाँ के हजारों पूजा स्थलों को तोड़ा? इस देश की पहचान तो वेद, उपनिषद्, गीता, बौद्ध, जैन, सिख ग्रंथों से है। यदि वे इस देश के होकर रह गए थे, जैसा कि वाम-श्यूडो सेक्युलर कहते हैं, तो क्या मुगलों ने इन ग्रंथों और इस देश के ज्ञान-विज्ञान, दर्शन-चिंतन और सांस्कृतिक मूल्यों को बढ़ावा दिया? क्या उन्होंने इन जीवन मूल्यों को मानने वाले हिंदू समाज की रक्षा की? नहीं ना? तो फिर वे इस देश के कैसे हो गए? मुगल यहाँ रह गये अवश्य, परन्तु यहाँ के कभी बने ही नहीं।

भारत के योद्धा, राजा-महाराजा केवल संघर्ष ही नहीं करते रहे, संघर्ष में जब-जब विजय रहे तब-तब इन्होंने यहां का शासन भी चलाया। उनके शासन काल के बारे में पाठ्य पुस्तकों में क्यों नहीं बताया जाता? इतिहास की पाठ्य पुस्तकों में दक्षिण के राष्ट्रकूट, चालुक्य राजा, गुर्जर-प्रतिहार, पाल वंश,चोल वंश, पांड्यन और पल्लव वंश के शासकों के शासन का कितना वर्णन है? पूर्वोत्तर के अहोम राजा तथा वीर लाचित बरफुकन का कहां है इतिहास की पुस्तकों में वर्णन? क्यों नहीं इनके शासनकाल का वर्णन विस्तार से किया गया? यदि इनका वर्णन करते तो मुगल काल का शासन बहुत फीका पड़ जाता। पाठ्य पुस्तकों में छत्रपति शिवाजी, महाराणा प्रताप, महाराजा रणजीत सिंह, बंदा बैरागी जैसों के शासन काल का विस्तृत विवरण क्यों नहीं है? लोगों को यहीं पता है कि महाराणा प्रताप ने जंगलों में रह कर अकबर से संघर्ष किया। कितनों को पता है कि इस संघर्ष में अंततः विजयी होकर प्रताप ने 12 वर्षों तक मेवाड़ पर निष्कंटक लोकप्रिय-जनहितैषी शासन चलाया था?

यदि अब केंद्र सरकार ने व्यापक स्तर पर देश व्यापी सर्वे करवाकर, चर्चा-बहस करवा कर एक सही इतिहास लेखन की शुरूआत की है तो मुगलों के विस्तृत इतिहास को पाठ्य पुस्तकों से हटाने पर इतनी चीख-चिल्लाहट क्यों? इतिहास में मुगलों का उतना ही उल्लेख होना चाहिए, जितना एक आक्रांता के लिए आवश्यक है। वे भारतीय इतिहास के नायक नहीं हैं। इतिहास की पाठ्य पुस्तकों में इस बात पर चर्चा हो कि भारत भूमि की रक्षा में हमारे योद्धा सफल क्यों नहीं रहे? आक्रांताओं की प्रवृति को समझने की भी बात हो, ताकि फिर से हम आक्रमणकारियों के विरूद्ध संघर्ष में कमजोर न पड़ें।

– रामस्वरूप अग्रवाल

डॉ.अम्बेडकर के शब्दों में भीम-मीम एकता की सच्चाई व इस्लाम सम्बन्धी उनके विचार

आजकल एक नया प्रचलन चला है। अनुसूचित जाति के कुछ लोग अपने आपको मुसलमानों से जोड़ कर यह दिखाने का प्रयास कर रहे हैं कि वे हिन्दुओं से अधिक मुसलमानों के निकट हैं। जमीनी सच्चाई एवं ऐतिहासिक तथ्यों को सरेआम ठेंगा दिखाना इसी को कहते हैं। भारतवर्ष का इतिहास उठा कर देख लीजिए, बौद्ध विहारों को तहस-नहस करने वाले कौन थे?

जातिवाद निश्चित रूप से अभिशाप था, लेकिन यदि कुछ हिन्दुओं ने जातिवाद के रूप में अत्याचार किए, तो मुसलमान भी पीछे नहीं थे। जातिवाद के विरुद्ध संघर्ष करने वाले डॉ. अम्बेडकर मुसलमानों के अत्याचार से भली-भांति परिचित थे। अपने अनुभवों और विचारों को डॉ. अम्बेडकर ने 'थॉट्स ऑन पाकिस्तान' पुस्तक में संकलित किया था। उनके विचारों को पढ़कर भी जय भीम जय मीम का नारा लगाने वाले अनुसूचित समाज के सदस्य सत्य को स्वीकार नहीं करेंगे तो इसे बेईमानी कहा जाएगा।

पढ़िए इस्लाम के सम्बन्ध में डॉ. अम्बेडकर के विचार

अम्बेडकर जी अपनी पुस्तक में लिखते हैं-''मुसलमानों के लिए हिन्दू काफ़िर हैं, और एक काफिर सम्मान के योग्य नहीं है। वह निम्न कुल में जन्मा होता है। उसकी कोई सामाजिक स्थिति नहीं होती। इसलिए जिस देश में क़ाफिरों का शासन हो, वह मुसलमानों के लिए दार-उल-हर्ब है ऐसी स्थिति में यह साबित करने के लिए और सबूत देने की आवश्यकता नहीं है कि मुसलमान हिन्दू सरकार के शासन को स्वीकार नहीं करेंगे।''(पृ. 304)

मुस्लिम भ्रातृभाव केवल मुसलमानों के लिए

''इस्लाम एक बंद निकाय की तरह है। यह मुसलमानों और गैर-मुसलमानों के बीच

जो भेद करता है, वह बिल्कुल मूर्त और स्पष्ट है। **इस्लाम का भ्रातृभाव मानवता का भ्रातृत्व नहीं है। मुसलमानों का मुसलमानों से भ्रातृभाव ही भ्रातृत्व है। यह बंधुत्व है, परन्तु इसका लाभ अपने ही निकाय के लोगों तक सीमित है और जो इस निकाय से बाहर हैं, उनके लिए इसमें सिर्फ घृणा और शत्रुता ही है।''**

मुसलमानों की देश के प्रति निष्ठा

''यह सामाजिक स्वशासन की एक पद्धति है और स्थानीय स्वशासन से मेल नहीं खाता, क्योंकि **मुसलमानों की निष्ठा, जिस देश में वे रहते हैं, उसके प्रति नहीं होती, बल्कि वह उस मजहबी विश्वास पर निर्भर करती है, जिसका कि वे एक हिस्सा हैं।''**

''एक मुसलमान के लिए इसके विपरीत या उल्टे सोचना अत्यन्त दुष्कर है। जहाँ कहीं इस्लाम का शासन है, वहीं उसका अपना विश्वास है। दूसरे शब्दों में, इस्लाम सच्चे मुसलमानों को भारत को अपनी मातृभूमि और हिन्दुओं को अपना निकट सम्बन्धी मानने की आज्ञा नहीं देता। सम्भवतः यही कारण था कि मौलाना मुहम्मद अली जैसे एक महान भारतीय, परन्तु सच्चे मुसलमान ने, अपने, शरीर को हिन्दुस्तान की बजाए येरूशलम में दफनाया जाना अधिक पसंद किया।''

भारत में इस्लाम के बीज मुस्लिम आक्रांताओं ने बोए

''मुस्लिम आक्रांता निस्संदेह हिन्दुओं के विरुद्ध घृणा के गीत गाते हुए आए थे। परन्तु वे घृणा का वह गीत गाकर और मार्ग में कुछ मंदिरों को आग लगा कर ही वापस नहीं लौटे। ऐसा होता तो यह वरदान माना जाता। वे ऐसे नकारात्मक परिणाम मात्र से संतुष्ट नहीं थे। उन्होंने इस्लाम का पौधा लगाते हुए एक सकारात्मक कार्य भी किया। इस पौधे का विकास भी उल्लेखनीय है। यह कोई ग्रीष्म में रोपा गया पौधा नहीं है। यह तो ओक वृक्ष की तरह विशाल और सुदृढ़ है। उत्तरी भारत में इसका सर्वाधिक सघन विकास हुआ है। यह इतना सघन है कि हिन्दू और बौद्ध अवशेष झाड़ियों के समान होकर रह गए हैं; यहाँ तक कि सिखों की कुल्हाड़ी भी इस ओक वृक्ष को काट कर नहीं गिरा सकी।''(पृ. 49)

मुसलमानों की राजनीतिक दाँव-पेंच में गुंडागर्दी

''तीसरी बात, मुसलमानों द्वारा राजनीति में अपराधियों के तौर-तरीके अपनाया जाना है। दंगे इस बात के पर्याप्त संकेत हैं कि गुंडागर्दी उनकी राजनीति का एक स्थापित तरीका हो गया है।'' (पृ. 267)

हत्यारे मजहबी शहीद

''महत्व की बात यह है कि मजहबी मुसलमानों द्वारा कितने प्रमुख हिन्दुओं की हत्या की गई। मूल प्रश्न है उन लोगों के दृष्टिकोण का, जिन्होंने ये कत्ल किये। जहाँ कानून लागू किया जा सका, वहाँ हत्यारों को कानून के अनुसार सजा मिली; तथापि प्रमुख मुसलमानों ने इन अपराधियों की कभी निंदा नहीं की। इसके विपरीत उन्हें 'गाजी' बताकर उनका स्वागत किया गया और उनके क्षमादान के लिए आन्दोलन शुरू कर दिए गए।''

''गुलामी भले ही विदा हो गई हो, परंतु जाति तो मुसलमानों में भी विद्यमान है। उदाहरण के लिए बंगाल के मुसलमानों की स्थिति को लिया जा सकता है।''

''1901 के लिए बंगाल प्रांत के जनगणना अधीक्षक ने बंगाल के मुसलमानों के बारे में यह रोचक तथ्य दर्ज किए हैं : मुसलमानों का चार वर्गों–शेख, सैयद, मुगल और पठान–में परम्परागत विभाजन इस प्रांत (बंगाल) में प्रायः लागू नहीं है। **मुसलमान दो मुख्य सामाजिक विभाग मानते हैं–1. अशरफ अथवा शरु और 2. अज़लफ। अशरफ से तात्पर्य है 'कुलीन', और अज़लफ अर्थात नीचा। अजलफ मुसलमानों को निकृष्ट व्यक्ति माना जाता है। उन्हें कमीना या रासिल, जो रिजाल का भ्रष्ट रूप है, या 'बेकार' कहा जाता है। कुछ स्थानों पर एक तीसरा वर्ग 'अरज़ल' भी है, जिसमें आने वाले व्यक्ति सबसे नीच समझे जाते हैं। उनके साथ कोई भी अन्य मुसलमान मिलेगा–जुलेगा नहीं और न उन्हें मस्जिद और सार्वजनिक कब्रिस्तानों में प्रवेश करने दिया जाता है। मुसलमानों में जाति ही नहीं, छुआछूत भी प्रचलित है।''** (पृ. 221–223)

इस्लामी कानून समाज सुधार विरोधी

''अधिक दुखद तथ्य यह है कि भारत के मुसलमानों में समाज सुधार का ऐसा कोई संगठित आन्दोलन नहीं उभरा जो इन बुराइयों का सफलतापूर्वक उन्मूलन कर सके। हिन्दुओं में भी अनेक सामाजिक बुराइयां हैं। परन्तु सन्तोषजनक बात यह है कि उनमें से अनेक इनकी विद्यमानता के प्रति सजग हैं और उनमें से कुछ उन बुराइयों के उन्मूलन हेतु सक्रिय तौर पर आन्दोलन भी चला रहे हैं। दूसरी ओर, मुसलमान यह अनुभव ही नहीं करते कि ये बुराइयां हैं। वे अपनी वर्तमान प्रथाओं में किसी भी परिवर्तन का विरोध करते हैं।''

मुस्लिम कानूनों के अनुसार भारत हिन्दुओं और मुसलमानों की समान धरती नहीं हो सकती

''इस्लाम के सिद्धान्तों के अनुसार, विश्व दो हिस्सों में विभाजित है–दार–उल–इस्लाम तथा दार–उल–हर्ब। मुस्लिम शासित देश दार–उल–इस्लाम हैं। वह देश जिसमें मुसलमान सिर्फ रहते हैं, न कि उस पर

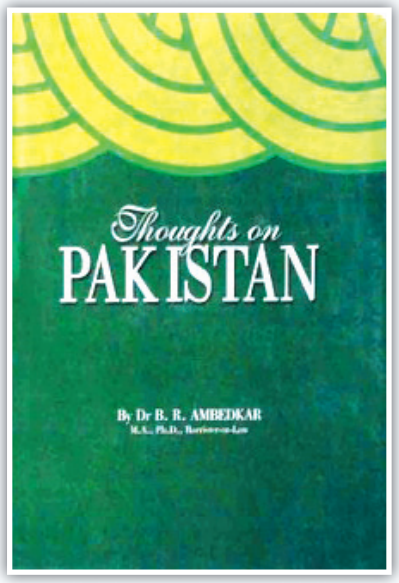

शासन करते हैं, दार–उल–हर्ब है। इसलिए **इस्लाम के अनुसार भारत हिन्दुओं तथा मुसलमानों दोनों की धरती नहीं हो सकती है। यह मुसलमानों की धरती हो सकती है, किन्तु यह हिन्दुओं और मुसलमानों की धरती, जिसमें दोनों समानता से रहें, नहीं हो सकती। फिर, जब इस पर मुसलमानों का शासन होगा तो यह मुसलमानों की धरती हो सकती है।''**

इस समय यह देश गैर–मुस्लिम सत्ता के प्राधिकार के अन्तर्गत है, इसलिए मुसलमानों की धरती नहीं हो सकती। यह देश दार–उल–इस्लाम होने की बजाय दार–उल–हर्ब बन जाता है। हमें यह नहीं मान लेना चाहिए कि यह दृष्टिकोण केवल शास्त्रीय है। यह सिद्धान्त मुसलमानों को प्रभावित करने में बहुत कारगर कारण हो सकता है। (पृ. 296–297)

दार–उल–हर्ब भारत को दार–उल–इस्लाम बनाने के लिए जिहाद

''यह उल्लेखनीय है कि जो मुसलमान अपने आपको दार–उल–हर्ब में पाते हैं, उनके बचाव के लिए हिजरत ही उपाय नहीं है। **मुस्लिम धार्मिक कानून की दूसरी आज्ञा जिहाद (धर्म युद्ध) है, जिसके अंतर्गत हर मुसलमान शासक का यह कर्त्तव्य हो जाता है कि वह इस्लाम के शासन का तब तक विस्तार करता रहे, जब तक सारी दुनिया मुसलमानों के नियंत्रण में नहीं आ जाती। संसार के दो खेमों में बंटने के कारण सारे देश या तो दार–उल–इस्लाम (इस्लाम का घर) या दार–उल–हर्ब (युद्ध का घर) की श्रेणी में आते हैं।''**

''तकनीकी तौर पर हर मुस्लिम शासक का, जो इसके लिए सक्षम है, कर्त्तव्य है कि वह दार–उल–हर्ब को दार–उल–इस्लाम में बदल दे; और भारत में जिस तरह मुसलमानों के हिज़रत का मार्ग अपनाने के उदाहरण हैं, वहाँ ऐसे भी उदाहरण हैं कि उन्होंने जिहाद की घोषणा करने में संकोच नहीं किया।''

''तथ्य यह है कि भारत, चाहे एक मात्र मुस्लिम शासन के अधीन न हो, दार–उल–हर्ब है, और इस्लामी सिद्धान्तों के अनुसार मुसलमानों द्वारा जिहाद की घोषणा करना न्यायसंगत है। वे जिहाद की घोषणा ही नहीं कर सकते, बल्कि उसकी सफलता के लिए विदेशी मुस्लिम शक्ति की सहायता भी ले सकते हैं, और यदि विदेशी मुस्लिम शक्ति जिहाद की घोषणा करना चाहती है तो उसकी सफलता के लिए सहायता दे सकते हैं।'' (पृ. 297–298)

हिन्दू–मुस्लिम एकता असफल क्यों रही?

''हिन्दू–मुस्लिम एकता की विफलता का मुख्य कारण इस अहसास का न होना है कि हिन्दुओं और मुसलमानों के बीच जो भिन्नताएं हैं, वे मात्र भिन्नताएं ही नहीं हैं, और→

→ उनके बीच मनमुटाव की भावना सिर्फ भौतिक कारणों से ही नहीं है, इस विभिन्नता का स्रोत ऐतिहासिक, मजहबी, सांस्कृतिक एवं सामाजिक दुर्भावना है, और राजनीतिक दुर्भावना तो मात्र प्रतिबिंब है। ये सारी बातें असंतोष का दरिया बना लेती हैं, जिसका पोषण उन तमाम बातों से होता है जो बढ़ते-बढ़ते सामान्य धाराओं को आप्लावित करती चली जाती हैं। दूसरे स्रोत से पानी की कोई भी धारा, चाहे वह कितनी भी पवित्र क्यों न हो, जब स्वयं उसमें आ मिलती है तो उसका रंग बदलने के बजाय वह स्वयं उस जैसी हो जाती हैं, दुर्भावना का यह अवसाद, जो धारा में जमा हो गया है, अब बहुत पक्का और गहरा बन गया है। जब तक ये दुर्भावनाएं विद्यमान रहती हैं, तब तक हिन्दू और मुसलमानों के बीच एकता की अपेक्षा करना अस्वाभाविक है।''(पृ. 336)

हिन्दू-मुस्लिम एकता असम्भव कार्य

''हिन्दू-मुस्लिम एकता की निरर्थकता को प्रगट करने के लिए मैं इन शब्दों से और कोई शब्दावली नहीं रख सकता। अब तक हिन्दू-मुस्लिम एकता कम-से-कम दिखती तो थी, भले ही वह मृग मरीचिका ही क्यों न हो। आज तो न वह दिखती है, और न ही मन में है। यहाँ तक कि अब तो गांधी ने भी इसकी आशा छोड़ दी है और शायद अब वह समझने लगे हैं कि यह एक असम्भव कार्य है।''(पृ. 178)

साम्प्रदायिक शान्ति के लिए अल्पसंख्यकों की अदला-बदली ही एकमात्र हल

''यह बात निश्चित है कि साम्प्रदायिक शांति स्थापित करने का टिकाऊ तरीका अल्पसंख्यकों की अदला-बदली ही है। यदि यही बात है तो फिर वह व्यर्थ होगा कि हिन्दू और मुसलमान संरक्षण के ऐसे उपाय खोजने में लगे रहें जो इतने असुरक्षित पाए गए हैं। यदि यूनान, तुर्की और बुल्गारिया जैसे सीमित साधनों वाले छोटे-छोटे देश भी यह काम पूरा कर सके तो यह मानने का कोई कारण नहीं है कि हिन्दुस्तानी ऐसा नहीं कर सकते। फिर यहाँ तो बहुत कम जनता को अदला-बदली करने की आवश्यकता पड़ेगी ओर चूंकि कुछ ही बाधाओं को दूर करना है। इसलिए साम्प्रदायिक शांति स्थापित करने के लिए एक निश्चित उपाय को न अपनाना अत्यन्त उपहासास्पद होगा।'' (पृ. 101)

विभाजन के बाद भी अल्पसंख्यक- बहुसंख्यक की समस्या बनी ही रहेगी

''यह बात स्वीकार कर लेनी चाहिए कि पाकिस्तान बनने से हिन्दुस्तान साम्प्रदायिक समस्या से मुक्त नहीं हो जाएगा। सीमाओं का पुनर्निर्धारण करके पाकिस्तान को तो एक सजातीय देश बनाया जा सकता है, परन्तु हिन्दुस्तान तो एक मिश्रित देश बना ही रहेगा। मुसलमान समूचे हिन्दुस्तान में छितरे हुए हैं। यद्यपि वे मुख्यतः शहरों और कस्बों में केंद्रित हैं। चाहे किसी भी ढंग से सीमांकन की कोशिश की जाए, उसे सजातीय देश नहीं बनाया जा सकता।

हिन्दुस्तान को सजातीय देश बनाने का एकमात्र तरीका है, जनसंख्या की अदला-बदली की व्यवस्था करना। यह अवश्य विचार कर लेना चाहिए कि जब तक ऐसा नहीं किया जाएगा, हिन्दुस्तान में बहुसंख्यक बनाम अल्पसंख्यक की समस्या और हिन्दुस्तान की राजनीति में असंगति पहले की तरह बनी ही रहेगी। (पृ. 103)

(सभी उद्धरण बाबा साहेब डॉ. अम्बेडकर सम्पूर्ण वाङ्मय, खंड 15-'पाकिस्तान और भारत के विभाजन', 2000 से लिए गए हैं)

एक अम्बेडकर जो भुला दिए गए !

ये वह महान व्यक्ति हैं जिन्हें आज कोई नहीं जानता। यह ब्राह्मण अध्यापक कृष्णाजी केशव अम्बेडकर हैं, जिन्होंने भीमराव रामजी सकपाल को अपना सरनेम (उपनाम) 'अम्बेडकर' देकर भीमराव रामजी अम्बेडकर बनाया, उनको पढ़ाया-लिखाया तथा अग्रिम अध्ययन के लिए विदेश भेजने हेतु गायकवाड़ बड़ौदा महाराज से सिफारिश करके छात्रवृत्ति की व्यवस्था कराई।

सचमुच समरसता और एकता हमारे समाज का सदा से अभिन्न अंग रही है। यह सामाजिक एकता सदैव भारत में बनी रहे ताकि बाबा साहब जैसी महान विभूतियाँ इस पावन धरा को सुसज्जित करती रहे।

सारा समाज एक साथ दिखे बस यही विकल्प है

मंगलमय प्रभात बेला की, सब मिलकर करो तैयारी।
खोया वैभव पाएंगे फिर से,जब देखेगी दुनियां सारी।।

सारी बाधाऐं मिट जाऐंगी, ऐसा सबका संकल्प है।
सारा समाज एक साथ दिखे, बस यही एक विकल्प है।।

हम आगे बढ़ते जाऐंगे, कोई अवरोध न आएगा।
जो पथ में कांटें रोपेगा वह, स्वयं ध्वस्त हो जाएगा।।

भारत माता पुनः प्रतिष्ठित, होगी अपने सिंहासन पर।
विश्व गुरु का परचम फिर, लहराएगा इसके आसन पर।।

आओ मिलकर करें साधना, इस अभीष्ट को पाने की।
पुरुखों ने जो कार्य दिया है, लक्ष्य तक उसे ले जाने की।।

निश्चय विजय प्राप्त होगी, इसमें न कोई शंका है।
अखंड भारत का फिर से, अब बजने वाला डंका है।।

भारत मां के सिंह सपूतो, कर लो स्वागत की तैयारी,
सदियों की मनोकामना अब, पूर्ण होगी हमारी।।

- रमाकान्त शर्मा, जयपुर

सामाजिक समरसता के योद्धा

बाबा साहब अम्बेडकर की जयंती पर प्रदेश में सर्वत्र हुए कार्यक्रम

- **बाबा साहब चाहते थे सशक्त समरसता युक्त राष्ट्र**
- **बंधुत्व भाव से परिपूर्ण समरस समाज**
- **समता, स्वतत्रंता और बंधुता पर दिया था जोर**
- **देश की एकता-अखंडता के लिए सदैव रहे प्रयत्नशील**
- **आज भी है उनके विचारों की प्रासंगिकता**

भारत रत्न बाबा साहब डॉ.भीमराव रामजी अम्बेडकर को उनकी 132वीं जयंती पर प्रदेश भर में याद करते हुए कई कार्यक्रम किए गए। जयपुर की डॉ.अम्बेडकर मेमोरियल वेलफेयर सोसायटी, मानव कल्याण समिति, निम्स विश्वविद्यालय, पाली में सामाजिक समरसता मंच, जोधपुर में राष्ट्रीय जनचेतना न्यास, जयपुर में सामाजिक न्याय फोरम की ओर से उच्च न्यायालय परिसर में हुए कार्यक्रम सहित कई संस्थाओं ने अपने कार्यक्रमों में बाबा साहब को याद किया। भारतीय जनता पार्टी ने 9 से 15 अप्रैल तक 'संविधान गौरव सप्ताह' का आयोजन किया। यह दिन अधिवक्ता परिषद द्वारा संपूर्ण देश में 'समरसता दिवस' के तौर पर मनाया गया।

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ ने इस अवसर पर राजस्थान के कई स्थानों पर प्रबुद्ध नागरिक संगोष्ठियों का आयोजन किया। इनमें समाज के सभी वर्गों के बंधु-भगिनी बड़ी संख्या में उपस्थित रहे।

बारां में संगोष्ठी के साथ ही राष्ट्रीय साहित्य की स्टॉल लगाई गई। बालोतरा में सांसी सेवा बस्ती की बालिकाओं को सिलाई मशीन वितरित की गई। उदयपुर में चित्रकला व मेंहदी प्रतियोगिता के साथ ही विभिन्न सेवा कार्यों का आयोजन किया गया। वहां पूरे सप्ताह को 'सेवा-सप्ताह' के रूप में मनाते हुए कई सेवा कार्य किए गए।

अलवर में अ.भा.विद्यार्थी परिषद की ओर से पूर्व संध्या पर 151 फीट लंबे तिरंगे के साथ यात्रा निकाली गई। जयपुर के मीडिया विद्यार्थियों ने राजभवन स्थित 'संविधान पार्क' का भ्रमण कर संविधान के बारे में जानकारी प्राप्त की।

संघ की ओर से बारां के श्रीराम स्टेडियम में प्रबुद्ध नागरिक सम्मेलन

डॉ. अम्बेडकर मेमोरियल वेलफेयर सोसायटी का कार्यक्रम

सामाजिक समरसता मंच द्वारा पाली के अग्रसेन भवन में विचार गोष्ठी

संघ बढ़ते-बढ़ते हो जाए समाज रूप
तब हिंदू समाज ही बन जाएगा संघ- डॉ.भागवत

समाज के अन्य संगठन-संस्थाओं के विपरीत राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ अपने नाम और संगठन को हमेशा के लिए बनाए रखना नहीं चाहता। संघ मानता है कि एक दिन हिंदू समाज ही संघ बन जाएगा, तब संघ यह नाम भी हट जाएगा। यह कहना है संघ प्रमुख सरसंघचालक डॉ.मोहन भागवत का।

डॉ. भागवत ने बुरहानपुर (ब्रह्मपुर) में कहा कि संघ समाज को अपना मानता है। एक दिन संघ बढ़ते-बढ़ते समाज रूप हो जाएगा। वे वहां नवनिर्मित कार्यालय का लोकार्पण कर रहे थे। उन्होंने कहा कि कार्यालय हिंदू समाज का केन्द्र बनना चाहिए। यह समाज के सहयोग से खड़ा हुआ है और समाज को ही समर्पित है।

संघ कार्य चलता है आत्मीयता से

डॉ.भागवत ने कहा कि संघ का कार्य आत्मीयता से चलता है, न कि स्वार्थ या भय से। कार्यालय पर आने वाले प्रत्येक व्यक्ति को आत्मीयता का अनुभव होना चाहिए। कार्यालय में अनुशासन का भी अवश्य ही पालन हो।

संघ है ईश्वरीय कार्य- हमें बनना है निमित्त

संघ का कार्य लोक संग्रह का है। यह ईश्वरीय कार्य है। हमें उसका निमित्त बनना है। समाज की इस संगठित शक्ति से अच्छे कार्य होंगे तथा सज्जन लोगों की सुरक्षा होगी, धर्म रक्षा के लिए इस शक्ति का उपयोग होगा, जो दुर्जन है, उनमें भय बैठेगा।

देश आगे बढ़ाने का कार्य ठेके पर नहीं दिया जा सकता

संघ प्रमुख ने कहा कि देश को आगे बढ़ाने का कार्य ठेके पर नहीं दिया जा सकता, संघ को भी नहीं दिया जा सकता। इसके लिए तो पूरे समाज को संगठित होकर, अपने देश के लिए जीने-मरने को तत्पर होकर, एक होकर, भेद और स्वार्थ भूलकर जीना पड़ता है। तब देश आगे बढ़ता है।

समस्त हिंदू समाज के लिए गुरु ग्रंथ साहिब प्रेरणा का केन्द्र

सरसंघचालक जी बुरहानपुर स्थित गुरुद्वारा बड़ी संगत पर दर्शन करने पहुँचे। उन्होंने श्री गुरु गोबिंद सिंह जी महाराज द्वारा हस्ताक्षरित गुरु ग्रंथ साहिब के दर्शन किए। इस अवसर पर उन्होंने कहा कि गुरु ग्रंथ साहिब समस्त हिन्दू समाज के लिए प्रेरणा का केन्द्र है। मैं यहाँ से प्रेरणा लेकर जा रहा हूँ। उन्होंने 40 मिनट रुककर ज्ञानी जी से चर्चा की एवं श्री गुरुद्वारा साहिब के इतिहास एवं सिख समाज के नवम गुरु तेगबहादुर जी के बलिदान के बारे में जाना।

जब बाबा साहब अम्बेडकर संघ के शिक्षा वर्ग में पधारे

सन् 1939 में डॉ. अम्बेडकर राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के शिक्षा वर्ग में गए थे। डॉ. अम्बेडकर ने प्रशिक्षण वर्ग के दौरान

शिविर में चल रहे सभी कार्यक्रमों को देखा और दोपहर में संघ संस्थापक डॉ. हेडगेवार के अनुरोध पर एक घंटे तक दलितों और उनके उत्थान की चर्चा की थी। उस वर्ग में बाबा साहब ने कहा था, ''यह पहली बार है जब मैं संघ के स्वयंसेवकों के शिविर में आया हूं। सवर्णों और दलितों के बीच पूर्ण समानता देखकर खुश हूं।''

भारत के उज्ज्वल भविष्य के लिए बाबा साहब अम्बेडकर और डॉ. साहब के विचारों की समानता एक सी थी। आज भी आरएसएस उसी के पथ पर कार्य कर रहा है। डॉ. अम्बेडकर ने अपनी पुस्तक 'थॉट्स ऑन पाकिस्तान' में कांग्रेस की मुस्लिम परस्त राजनीति की कड़े शब्दों में आलोचना की है। उन्होंने मुसलमानों के भारत में रहने पर सवाल उठाते हुए लिखा – क्या मुसलमानों की निष्ठा भारत के प्रति रह पाएगी?

-अंकित जायसवाल के लेख से साभार

तमिलनाडु में पथ– संचलन पर रोक का मामला

सर्वोच्च न्यायालय में भी हारी डीएमके सरकार

न्यायालय ने दी पथ संचलन निकालने की अनुमति

तमिलनाडु की डीएमके सरकार ने मुस्लिम तुष्टीकरण के लिए राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ द्वारा निकाले जाने वाले 'पथ संचलन' पर रोक लगा दी थी, परंतु उनका यह निर्णय न तो उच्च न्यायालय में टिक सका और न ही सर्वोच्च न्यायालय में। न्यायालय ने डीएमके सरकार के पथ संचलन पर रोक लगाने के निर्णय को असंवैधानिक बताते हुए संघ के पक्ष में फैसला दिया। परिणामतः बीती 16 अप्रैल को तमिलनाडु के 45 नगरों में भव्य पथ संचलन निकाले गए।

आधारहीन तथ्यों पर रोक

वस्तुतः संघ ने गांधी जयंती 2 अक्टूबर,2022 को स्वतंत्रता के अमृत महोत्सव, डॉ.बी.आर अम्बेडकर के जन्म दिवस और विजयादशमी के उपलक्ष्य में तमिलनाडु के विभिन्न नगरों में पथ संचलन निकालने की योजना बनाई थी। इसके लिए पुलिस सहित राज्य के अधिकारियों से आवश्यक अनुमति मांगी गई। परन्तु डीएमके की सरकार द्वारा निर्देशित प्रशासन ने इन पथ संचलनों के लिए अनुमति देने से इंकार कर दिया। कारण बताया गया कि पीएफआई अर्थात इस्लामिक कट्टरपंथी संगठन 'पॉपुलर फ्रंट ऑफ इंडिया' पर केन्द्र सरकार द्वारा प्रतिबंध लगाने से तनाव बढ़ गया है, इसलिए संघ को किसी रैली की अनुमति नहीं दी जा सकती।

खंडपीठ का निर्णय

संघ ने राज्य सरकार के इस निर्णय को मद्रास उच्च न्यायालय में चुनौति दी। उच्च न्यायालय की एकल–पीठ ने मात्र तीन स्थानों पर संचलन की अनुमति दी। संघ ने इन तीन स्थानों पर पथसंचलन निकालने के बाद एकल पीठ के निर्णय के विरुद्ध खंड–पीठ में अपील की। खंडपीठ ने एकल पीठ के निर्णय को रद्द करते हुए तमिलनाडु राज्य में कहीं भी पथ संचलन निकालने की स्वीकृति प्रदान कर दी।

सुरक्षा प्रदान करना राज्य का कर्तव्य

मद्रास उच्च न्यायालय ने जनता तक पहुँचने तथा वैचारिक व राजनीतिक अभिव्यक्ति के नागरिकों के मूल अधिकार का हवाला देते हुए संघ के पथ संचलनों पर लगाए गए प्रतिबंधों को हटा दिया। न्यायालय ने यह भी कहा कि कानून और व्यवस्था की किसी भी अप्रत्याशित या अनपेक्षित स्थिति से निपटना राज्य और पुलिस विभाग का कर्तव्य है। कानूनी अधिकार के लिए पर्याप्त सुरक्षा प्रदान करना राज्य का दायित्व है।

पथ संचलन है मौलिक अधिकार

उच्च न्यायालय के न्यायमूर्ति आर महादेवन और न्यायमूर्ति मोहम्मद शफीक की खंड–पीठ ने अपने निर्णय में उपरोक्त बातों के अलावा यह भी कहा कि,'' भले ही राज्य को प्रतिबंध लगाने का अधिकार है, वह केवल उचित प्रतिबंध ही लगा सकता है। चूंकि संगठन को सार्वजनिक स्थानों पर शांतिपूर्ण जुलूस और बैठकें आयोजित करने का अधिकार है, इसलिए राज्य नए खुफिया इनपुट की आड़ में ऐसी कोई शर्त नहीं लगा सकता जिससे संगठन के मौलिक अधिकारों का लगातार उल्लंघन होता हो।''

राज्य की डीएमके स्टालिन सरकार ने इस फैसले को रद्द कराने के लिए सर्वोच्च न्यायालय में याचिका प्रस्तुत की। सर्वोच्च न्यायालय ने मद्रास उच्च न्यायालय की खंडपीठ के निर्णय को उचित बताते हुए राज्य सरकार की याचिका खारिज कर दी तथा कहा कि संघ के स्वयंसेवक वहां पीड़ित थे, न कि अपराधी। अतः उच्च न्यायालय द्वारा पारित आदेश में दोष निकालना हमारे लिए संभव नहीं है।

मामला मुस्लिम तुष्टीकरण का

देश के कई राज्यों में पिट गए 'मुस्लिम तुष्टीकरण' के फार्मूले को तमिलनाडु की डीएमके स्टालिन सरकार अभी पकड़े हुए है। वह मुस्लिम वोट बैंक को अपने साथ बनाए रखने के लिए हिंदू विरोध की हर सीमा पार करती रहती है। संघ के पथ संचलनों पर भी रोक लगाने के पीछे यही मानसिकता काम कर रही थी। बहुसंख्यक समाज को

इस पर विचार करने की आवश्यकता है। हिंदू विरोध की मानसिकता न केवल कांग्रेस, सपा व टीएमसी ही ग्रस्त नहीं है, बल्कि डीएमके भी उसी राह पर चल रही है। सर्वोच्च न्यायालय का निर्णय डीएमके और कांग्रेस के इस हिंदू विरोधी मॉडल पर करारा प्रहार है। जिस प्रकार से न्यायपालिका भारतीय संस्कृति एवं सत्य की संरक्षा में खड़ी दिखाई दे रही है, वह प्रशंसनीय है।

निर्णय सम्पूर्ण देश में लागू होगा

सर्वोच्च न्यायालय का यह निर्णय पूरे देश पर लागू माना जाएगा। अब चाहे सपा हो, कांग्रेस हो या ममता बनर्जी की टीएमसी, कोई भी संघ की किसी रैली या पथ संचलन पर किसी कल्पित आधार पर प्रतिबंध नहीं लगा सकेगा।

बढ़ रही है हिंदू समाज की एकजुटता

डीएमके, कांग्रेस, सपा, टीएमसी आदि छद्म सेकुलर दलों को शीघ्र ही यह अहसास होने लगेगा कि जाति, भाषा, धर्म जैसे आधारों पर समाज को विभाजित करने के पैंतरे अब महत्वहीन होते जा रहे हैं। अब हिंदू समाज की एकजुटता बढ़ती जा रही है, जिसे रोक सकना अब उनके वश की बात नहीं रह गई है। शीघ्र ही उन्हें हिंदू जागरण की पदचाप सुनाई देने लगेगी।

कुंठित मानसिकता के लोग

पता नहीं क्यों, संघ द्वारा सहजतापूर्वक चलने वाले व्यक्ति रचना व समाज परिवर्तन के कार्य द्वेष के कारण कुछ लोगों को रास नही आते। संभवतः ऐसे लोग भारत को ना कभी पहले एक राष्ट्र के रूप में देखने को तैयार थे ना आज हैं। इसलिए अपनी कुंठित मानसिकता के कारण वे हर विषय को राजनीतिक स्वार्थ के वशीभूत होकर देखते हैं। सत्ता व विधि व्यवस्था के दुरुपयोग द्वारा इस प्रकार की कुत्सित मानसिकता का प्रदर्शन भी करते रहते हैं। परंतु संघ ने सदैव धैर्य के साथ, संविधान में विश्वास रख न्यायालय के समक्ष अपना पक्ष दृढ़ता से रखा है।

सत्य की हुई विजय

अंततोगत्वा छद्म सेक्युलर सरकार का दम्भ हारा, संघ सफल हुआ, भारत के विचार की जय हुई, अभारतीय विचार पराजित हुआ। स्वयंसेवकों को संचलन की अनुमति मिली। सत्य की विजय का उत्सव सम्पन्न करने के लिए संघ रुकेगा नहीं, बल्कि भारत को विश्वगुरु बनाने तक बढ़ता ही रहेगा। ■

पथ संचलन

भारत में लम्बे समय से संचलन की परम्परा रही है। रामायण, महाभारत से लेकर राजाओं की सेनाओं द्वारा संचलन किया जाता था, उनकी पदचाप से न केवल वीरता का संचार होता था अपितु अरिदल में भयकंप व्याप्त हो जाता था। संचलन में केवल वेशभूषा की समानता का व एक साथ पंक्तिबद्ध चलने के बाहरी दृश्य का ही महत्व नहीं होता बल्कि संचलन करने वाले प्रत्येक सैनिक का हृदय भी आपस में जुड़ जाता है, जो इसकी उपयोगिता को और अधिक गुणवत्तापूर्ण बनाता है। संचलन गति व दिशा का अद्वितीय संयोजन भी होता है।

हृदय में राष्ट्रभक्ति का भाव लिए– आज के युग में जब सामने देखते हुए, कंधे से निकलती भुजाएं, बंद मुट्ठी, कंधे पर दण्ड तथा सीध मिलाकर आरएसएस की रणधुन निकालते बैंड के साथ स्वयंसेवक हृदय में राष्ट्रभक्ति का भाव लिए देश की एकता व अखण्डता के लिए कदम से कदम मिलाकर साथ-साथ चलते हैं, तो यह दृश्य वास्तव में अदभुत और मनमोहक होता है।

राजपथ की परेड का सा दृश्य– संघ के प्रारम्भ में संचलन 'मातृभूमि गान से गूंजता रहे गगन.....' जैसे गीत, कोरस, सीटी व एक दो एक की आवाज के साथ होता था। समय के साथ इसमें बैण्ड को भी सम्मिलित किया गया। साइड ड्रम की ताल, बैस ड्रम का निनाद, बिगुल की ध्वनि, वंशी का मधुर स्वर व झलरी की झंकार मानो राजपथ पर होने वाली परेड का सा आभासी दृश्य उत्पन्न कर देती है। संघ की हर यूनिट के इस सालाना आयोजन में विद्यार्थी, कलासाधक, श्रमजीवी, कृषक, व्यापारी, प्रोफेशनल्स, शिक्षाविद् अर्थात् समाज के प्रत्येक वर्ग, जाति के स्वयंसेवक संचलन में सहभाग करते हैं।

समाज द्वारा स्वागत– हिन्दू समाज की संगठित शक्ति का यह प्रदर्शन दुःर्जनों को मर्यादित रहने व सज्जनों के संरक्षण का अभिवचन है। ऐसे संचलन की समाज को भी उत्सुकता से प्रतीक्षा रहती है। पथ संचलन के मार्गों पर रंगोली बनाना, स्वागत द्वार लगाना व दोनों हाथों से भगवा ध्वज पर पुष्प वर्षा करना, मन में सम्मान का भाव लिए भारत माता का जयघोष करना, संघ को समर्थन व सहयोग देने हेतु समाज की तत्परता दर्शाता है। नए लोग इसे संघ की दशहरा रैली भी कहते हैं, यह विजयादशमी पर होने वाली शक्ति की पूजा का प्रतीक है।

महीनों पूर्व तैयारी– संचलन के महीनों पूर्व शाखाओं पर अभ्यास व आरएसएस ऑफ़िस में ड्रेस लेने वालों की चहल पहल बढ़ जाती है। इस समय बालकों का उत्साह भी देखते ही बनता है। एक ही परिवार की तीन चार पीढ़ी एक साथ संघ के यूनिफॉर्म में दिखाई देती है। कभी-कभी एक या अधिक जिलों का तीन की बजाय चार व छह पंक्तियों में द्विधारा व त्रिवेणी संचलन और अधिक विराट एवं प्रभावकारी दृश्य उत्पन्न करते हैं।

नागरिक अनुशासन की झलक – संचलन में चलने वाला आत्मविश्वास से भरा बांका जवान अपने शीष पर टोपी धारण कर, उन्नत ललाट पर सुशोभित चंदन का लम्बा तिलक, सिंह समान नेत्रों में तेज, आभायुक्त मुखमंडल, चौड़ा सीना, तनी हुईं भुजाएं, सधे कदम से चुनौती को ललकारता, बाधाओं को रौंधता, आकर्षक रोबीला, जिसे देश धर्म पर नाज है, ऐसे स्वयंसेवकों के समूहों द्वारा नागरिक अनुशासन की झलक मिलती है। अतीत में पथ संचलन की समयबद्धता व सेनासम दृश्यों से पराक्रमी सुभाष चंद्र बोस व भारत के प्रथम सेनाध्यक्ष जनरल करिअप्पा भी प्रभावित हुए थे।

(राष्ट्रदूत, दिनांक 20.04.23 के युवा लेखिका शीतल के लेख से साभार)

भरतपुर में हुआ ब्रज संवादोत्सव

राजस्थान के विभिन्न अंचलों में साहित्य चर्चा की जो धारा सीकर के 'शेखावाटी साहित्य संगम' से शुरू हुई थी,वह अब भरतपुर में 'ब्रज संवादोत्सव' के रूप में फलीभूत हुई है।

गत 22 व 23 अप्रैल को हुए इस

साहित्य उत्सव के संयोजक जैनेन्द्र ने बताया कि ब्रज संवादोत्सव का शुभारम्भ प्रसिद्ध फिल्म समीक्षक व सीनियर कॉलमिस्ट अनंत विजय, राजस्थान ब्रज भाषा अकादमी के अध्यक्ष डॉ. रामकृष्ण शर्मा और राजस्थान फिल्म फेस्टिवल की संस्थापक अंशु हर्ष द्वारा माँ सरस्वती व गिर्राज महाराज के चित्र पर दीप प्रज्जवलित कर किया गया। उद्घाटन सत्र के बाद फिल्मों में 'स्व का बोध' विषय पर पैनल डिस्कशन हुआ।

संवादोत्सव के पहले दिन दो सत्रों का आयोजन हुआ। दूसरे दिन चार सत्र हुए। उत्सव में नाट्य व नृत्य प्रस्तुतियाँ भी दी गई। सह संयोजिका मीनू ने बताया कि उत्सव के स्थान श्री गुरु हरिकिशन पब्लिक स्कूल में वक्ताओं के उद्बोधन, पैनल डिस्कशन, पुस्तक विमोचन, कई प्रकाशकों की पुस्तकों के स्टॉल, सेल्फी पॉइंट, ब्रज सम्बन्धी प्रदर्शनी, प्रतियोगिताएं आदि कार्यक्रम हुए।

सत्य को स्थापित करने में लगता है समय

पहले दिन वरिष्ठ पत्रकार अनंत विजय ने कहा कि सत्य को स्थापित करने में समय लगता है। हम इस दिशा में बढ रहे हैं। उन्होंने अनेक विदेशी लेखकों की पुस्तकों पर सवाल उठाते हुए कहा कि भारत की परम्पराओं को खारिज करने की प्रवृत्ति विदेशी लेखकों की पुस्तकों में मिलती है। कई पुस्तकों में भारत की परम्पराओं का उपहास उड़ाया गया है।

ब्रज भाषा के बिना हिन्दी की कल्पना नहीं

श्री अनंत विजय ने कहा कि ब्रज भाषा के बिना हिन्दी की कल्पना ही नहीं की जा सकती। हिन्दी भाषा का इतिहास ब्रज भाषा से ही शुरू होता है। ब्रज भाषा को हिन्दी से अलग नहीं किया जा सकता।

ब्रज संस्कृति संसार को प्रेम व भाईचारा देने वाली

राजस्थान ब्रज अकादमी के अध्यक्ष डॉ. रामकृष्ण शर्मा ने कहा कि ब्रज की संस्कृति छह हजार वर्ष पुरानी है और सारे संसार को प्रेम और भाईचारे का संदेश देने वाली है। उन्होंने ब्रज संवाद उत्सव की प्रशंसा करते

हुए कहा कि ब्रज मंथन जैसी संस्थाएं जीवन मूल्यों की रक्षा कर रही हैं। उन्होंने कहा कि राष्ट्र निर्माण जीवन मूल्यों से होता है और जीवन मूल्यों की रक्षा संस्कृति से होती है।

ब्रज के भजन आज भी गुनगुनाते हैं

राजस्थान फिल्म फेस्टिवल की डायरेक्टर अंशु हर्ष ने कहा कि ब्रज संवाद उत्सव में आकर अलग अनुभूति हो रही है। बचपन से हम भजन सुनते आ रहे हैं,जो ब्रज की धरा के इर्द-गिर्द घूमते हैं। ब्रज भाषा में

उतारी गई कहानियां हम दादी–नानी से सुनते आए हैं।

विश्व की पहली महिला शासक भारत की ही थी

संवादोत्सव के दूसरे दिन उच्चतम न्यायालय की अधिवक्ता सुबुही खान ने चर्चा में भाग लेते हुए कहा कि भारत ही विश्व में एक ऐसा देश है, जहाँ धरती को माँ माना जाता है । यहाँ फेमिनिज्म (स्त्रीत्व) को अचीव नहीं बल्कि महसूस किया जाता है। पूरे विश्व में पहली महिला शासक यशोमति भारत की ही थी। सुबुही खान ने कहा कि जिस देश में भगवान को अर्द्धनारीश्वर कहा जाता है वहां हिजाब, घूंघट जैसी कुरीतियों के लिए कोई स्थान नहीं है।

कार्यक्रम में लेखिका प्रगति गुप्ता ने कहा कि नारी परिवार की धुरी और समाज की एक महत्वपूर्ण इकाई है। माता, संतान की प्रथम गुरु है।

ब्रज संवादोत्सव को सफल बनाने में रात–दिन एक कर कार्य करने वाले 50 वॉलंटिसर्य को भी सम्मानित किया गया।

पुस्तक विमोचन

ब्रज संवादोत्सव के दौरान पुस्तक मेले में जेएन ऋषि वंशी द्वारा रचित पुस्तक 'कृष्णांशी' का विमोचन किया गया। इस पुस्तक में महाभारत के पौराणिक पात्रों के रूपक द्वारा इतिहास के अनछुए पहलुओं पर प्रकाश डाला गया है।

पुस्तक मेला

भरतपुर में पहली बार ब्रज संवादोत्सव के अंतर्गत पुस्तक मेले का आयोजन किया गया। पुस्तक मेले में राष्ट्रीय प्रकाशनों की पुस्तकें एक ही स्थान पर उपलब्ध होने तथा उनकी खरीद पर विशेष छूट दिये जाने के कारण लोगों ने बड़ी संख्या में पुस्तकें खरीदी। इस मेले में प्रभात प्रकाशन, सुरुचि प्रकाशन, गरुड प्रकाशन, राष्ट्रोत्थान साहित्य, अपना साहित्य, आकाशवाणी प्रकाशन, पत्रिका प्रकाशन,

गीता प्रेस गोरखपुर,मेठी बुक डिपो, गायत्री परिवार प्रकाशन, आदर्श प्रकाशन, ज्ञान गंगा प्रकाशन आदि प्रकाशनों की पुस्तकें बुक स्टॉल्स पर प्रदर्शित की गई।

सांस्कृतिक कार्यक्रम

संवादोत्सव के दौरान भरतपुर का प्रसिद्ध बम नृत्य प्रस्तुत किया गया। मयूर नृत्य से माहौल राधामय हो गया। राधा–कृष्ण की रासलीला तथा बरसाने की होली ने विशेष रूप से वाहवाही बटोरी। हर कोई भक्ति रस में सराबोर दिखाई दिया।

विदेशियों के लिए प्रतिबंधित क्षेत्र में रोहिंग्या महिला पहुँची, निकाह भी कर लिया

राजस्थान के श्रीगंगानगर जिले के पाकिस्तान से सटे कुछ गांवों का इलाका भारत की सुरक्षा की दृष्टि से संवेदनशील होने के कारण विदेशियों के लिए प्रतिबंधित किया हुआ है। इस इलाके में विदेशियों का प्रवेश वर्जित है। ऐसे ही एक इलाके जैतसर के गांव सरदारगढ में तीन रोहिंग्या महिला न केवल पहुँच गयी वरन् वहाँ के निवासियों से निकाह भी कर लिया है।

रोहिंग्या वे अवैध घुसपैठिए हैं जो हजारों किमी दूर पूर्व में त्रिपुरा–मणिपुर से भी आगे म्यांमार देश से भगा दिए गए थे।

जैतसर थाना प्रभारी विरमसिंह ने बताया कि म्यांमार की रहने वाली आसमा उर्फ हमीदा सरदारगढ़ के मोहम्मद अली पुत्र यासीन खां से तीन माह पूर्व निकाह कर वहीं रह रही थी। हमीदा की बहन रसीदा पहले से ही बीकानेर जिले के गांव महाजन में रह रही थी। उसका पति महाजन स्थित फील्ड फायरिंग रेंज में कबाड़ बीनने का काम करता है। इस प्रकार उसकी पहुँच सीधे भारतीय सेना तक थी।

सरदारगढ़ में ही एक और रोहिंग्या महिला के होने के जानकारी पुलिस को मिली थी। पुलिस द्वारा इन तीनों रोहिंग्या महिलाओं को हिरासत में लेने के समाचार हैं।

गौ-आधारित जैविक खेती ही क्यों !

● बद्रीनारायण चौधरी

जिस भूमि में बीज उग जावे, वह माँ है। वह स्वयं पूर्ण है, इसमें सब कुछ पहले से ही मौजूद है। बाहर से कुछ भी देने की आवश्यकता नहीं होती। इसीलिए जंगलों में स्वतः बीज गिरते हैं, वर्षा का पानी पर्याप्त होता है, कोई खाद बाहर से नहीं आती, कोई दवा नहीं छिड़की जाती। फिर भी हरे,भरे, निरोगी, फलदार भी एवं अन्य पेड़-पौधे भरे रहते हैं, बशर्ते कि मनुष्य उन्हें नुकसान नहीं पहुँचावे।

प्रकृति करती है हमारा पोषण

इसी प्रकार यह प्रकृति भी माता है, जो जीवन भर हमारी आवश्यकताओं की पूर्ति को तत्पर रहती है, अर्थात् पालन-पोषण करती है। यह समस्त 84 लाख योनियों में व्याप्त सभी जीवों के लिए पर्याप्त है। परंतु उनकी क्षुधापूर्ति के लिए है, इच्छाओं की पूर्ति करने के लिए नहीं। केवल मनुष्य ऐसा प्राणी है, जो बहुत कुछ अच्छे परिणाम प्रकृति से पा सकता है, परंतु उसका लालच एवं महत्वाकांक्षाएं, उसको प्रकृति का शोषण करने को प्रेरित करते हैं। विज्ञान तो इस पर विजय प्राप्त करने की बात करता है।

ग्रंथों में है प्रकृति के रहस्यों का विवरण

84 लाख में से मात्र 4% ही योनियाँ दृश्यमान हैं। शेष मौजूद रहते हुए भी अदृश्य रूप में सूक्ष्म रूप में विद्यमान हैं। हमारे प्राचीन ऋषि-मुनियों ने इस प्रकृति के रहस्यों का उद्घाटन बड़ी ही निपुणता के साथ किया। आर्यग्रंथों एवं सनातन वांग्मय में सूत्र रूप में प्रदर्शित उदाहरण बड़ी मात्रा में भरे पड़े हैं। प्रकृति से प्राप्त करने के लिए लोकहित में जरूरी होने पर ही, पहले प्रार्थना/क्षमा याचना करके ही किसी वस्तु को लेने का निर्देश भी साथ में दिया गया है।

समझे प्रकृति की संरचना

जहां तक कृषि का प्रश्न है, तो प्रकृति के नियमों का बखूबी पालन करते हुए, इसकी वैज्ञानिक संरचना को समझकर, उसमें सहायक बनकर, अन्न उत्पादन करने का संदेश हमारे पूर्वजों ने दिया है। इसके लिए ऋतुओं का, मौसमी परिवर्तनों का, ग्रहों-नक्षत्रों के प्रभाव का, खगोलीय परिवर्तनों का, सकारात्मक एवं नकारात्मक उर्जा के प्रभाव का, सभी महाभूतों के पर्यावरण शुद्ध चक्र का और प्रकृति के नियमों के प्रभाव एवं उनके संरक्षण का उनको पूर्ण ज्ञान था, ऐसे अनेक उदाहरण भरे पड़े हैं।

जीवो जीवस्य जीवनम्

अधिकांश ऋषियों ने कृषि विज्ञान पर अपने अनुभूत ज्ञान का जो वर्णन किया, आज का विज्ञान अभी वहां तक पहुँचने में कितना समय लेगा, कहना मुश्किल है। प्रकृति के जिन 108 तत्वों का वर्णन उन्होंने किया, वहीं पर अभी आज का कृषि विज्ञान मुख्य तत्व, सूक्ष्म तत्व और अति सूक्ष्म तत्वों का खेती में प्रयोग की बात करता है तो अधिकतम 30 तत्वों से आगे नहीं बढ़ रहा।

ऋषि पाराशर कहते हैं, प्रत्येक जीव दूसरे जीवों को जीवन देता है। 'जीवो जीवस्य जीवनम्' 'जन्तुनामजीवनम्।' दूध का जीवाणु (लेक्टोज) दही के जीवाणुओं के लिए जिस प्रकार अपना त्याग करता है। जंगल की सुरक्षा शेर से है तो, शेर की भी सुरक्षा जंगल से ही है। ऐसी सहजीवी एवं परिपूरक रचना इस प्रकृति में पाई जाती है, जो चराचर जगत के स्वतः संचालित होने के कारण भी है।

प्रकृति की व्यवस्था में बने सहायक

यदि मनुष्य प्रकृति की इस व्यवस्था में सहायक बनकर कुछ भी प्राप्त करे , खेती भी करे तो उसके इस कार्य में प्रकृति सहायक होती है। दुर्भाग्य से हमारे कृषि विज्ञान ने प्रकृति के इन गूढ़ रहस्यों को समझकर/शोध करके बढ़ने का तरीका अपनाया होता तो त्रुटि की संभावना नहीं रहती, परन्तु बिना प्रकृति की कार्य प्रणाली के साथ कदम मिलाए ही प्रत्यक्ष प्रयोग करके देखने से तात्कालिक चमत्कार दिखाने वाले रासायनिक पदार्थों पर वैज्ञानिक प्रयोग तो किए, पर उनके दूरगामी प्रभाव का आकलन नहीं कर सके। हर समस्या के समाधान का इसी प्रकार प्रयोग करते गए और तात्कालिक हल निकालते गये। प्रकृति की स्थापित व्यवस्था में वह प्रयोग कितना सकारात्मक होगा, यह विचार भी नहीं किया गया।

गलत निदान से पर्यावरण विनाश

केवल आयुर्वेद का ही विधिवत शोध कार्य कर लिया होता तो बहुत बड़ा सूत्र हाथ लग जाता। इस त्रिगुणात्मक प्रकृति (सत-रज-तम) के गुणों में निश्चित साम्य अवस्था में क्षोभ उत्पन्न होने पर त्रिदोष उत्पन्न होते हैं। इससे वात-पित्त-कफ का विचलन रोग को आमंत्रित करता है। आयुर्वेद चिकित्सक इसी रास्ते पर चलकर रोग का मूल कारण पहले पकड़ता है, फिर उसी को पुनः संतुलित करने की चिकित्सा करता है, फिर चाहे रोग दिल का, किडनी का, लीवर का, चर्म का या अन्य कोई भी हो, इसके द्वारा रोग निवारण स्थाई रूप से होता है और प्राकृतिक वनस्पतियों से निर्मित दवाइयों के प्रयोग से कोई साइड इफेक्ट भी नहीं होता। यहां खण्ड-खण्ड में रोगी की चिकित्सा नहीं की जाती, जैसे आंख की चिकित्सा अलग, स्किन की अलग, हर अंग के लिए अलग-अलग एक्सपर्ट और अलग-अलग दवाइयाँ देना। यही निदान प्रक्रिया खेती में भी लागू की गई, जिसके कारण रासायनिक पदार्थों का उपयोग बढ़ता गया, बीमारियाँ बढ़ती गई, भूमि निर्जीव होती गई, पानी रीत गया, पर्यावरण विनाश की सीमा तक पहुँच गया। परंतु अब जन चेतना के कारण पुनः गैर रसायनों द्वारा उत्पन्न अर्थात जैविक पद्धति से उत्पन्न खाद्यान्न की मांग बढ़ने लगी है। क्रमश : .....

-राष्ट्रीय अध्यक्ष, भारतीय किसान संघ

सामूहिक कन्या पूजन- सामाजिक समरसता का अनूठा प्रयास

गांव-बस्ती की सभी जातियों की कन्याओं का एक साथ पूजन

जाति-बिरादरियों में बंटे हिंदू समाज के इन विभेदों को जहां राजनीतिक दलों एवं राजनीति में जाने के इच्छुक लोगों द्वारा उभारने का काम किया जाता है, वहीं कुछ लोग ऐसे भी हैं जो समाज में समरसता के लिए निरंतर प्रयास करते रहते हैं। नित नए प्रयोगों के माध्यम से सभी समाजों-समुदायों को जोड़ने का कार्य करते हैं।

पिछले दिनों आए नवरात्रों में कई गांवों एवं शहरी बस्तियों में वहां निवास करने वाली सभी जातियों के सभी परिवारों की कन्याओं को पूजन हेतु आमंत्रित किया गया तथा उन सभी जातियों के लोगों को भी कन्या-पूजन हेतु बुलाया गया।

अब तक घर में 9 या 11 कन्याओं को बुलाकर पूजन करने और भोजन कराने की परंपरा से यह आयोजन थोड़ा हटकर था। इसमें गांव या बस्ती की सभी जातियों की सभी कन्याओं का सामूहिक पूजन व भोजन-प्रसादी का एक सामूहिक कार्यक्रम रखा गया। पूजन करने वाले भी उसी गांव की सभी जाति बिरादरी के लोग थे।

इस कार्यक्रम में जहां समाज के साथ मिलकर कार्य करने की प्रवृत्ति बनेगी, वहीं नई पीढ़ी को भारतीय संस्कृति, आस्था और परंपराओं से जोड़े रखने में भी मदद मिलेगी।

इस अनूठे सामाजिक समरसता के कार्यक्रम की शुरुआत राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की समरसता-गतिविधि के कार्यकर्ताओं ने की।

इसके लिए प्रमुख स्वयंसेवकों की बैठक बुलाकर स्थानीय स्तर पर समिति बनाई गई।

अधिकतर स्थानों पर इन समितियों का नाम 'श्री हनुमान भक्त मंडल' रखा गया। गांव-बस्ती में निवास करने वाली सभी जातियों की सूची बनाई गई। प्रत्येक घर से संपर्क करते हुए सूचना-पत्रक पहुँचाया गया। प्रत्येक घर जाकर कन्या का नाम लिखा गया। प्रत्येक जाति के परिवार को पूजन हेतु आने का आग्रह किया गया। पाथेय कण को प्राप्त सूचना के अनुसार निम्नांकित गांव-बस्तियों में इस प्रयोग को किया गया।

क्र.	विभाग/जिला	चयनित बस्ती	कन्याएं	अन्य		कुल सहभागी	जातियों की संख्या
				महिला	पुरुष		
1.	भरतपुर	वैर	410	60	40	510	30
2.	स.माधोपुर/दौसा	लालसोट	261	25	40	326	21
3.	अलवर/भिवाड़ी	खैरथल	370	150	150	670	12
4.	जयपुर/विद्याधरनगर	झोटवाड़ा	350	75	50	475	25
5.	सांगानेर/बस्सी	लक्ष्मीनगर	621	130	120	871	34
		मॉडलटाउन	525	100	120	745	35
6.	सीकर/श्रीमाधोपुर	नीम का थाना	75	30	40	145	14
7.	सीकर/रतनगढ़	हरियासर गाव	200	60	40	300	13
8.	कोटा/महा.	गणेश नगर	270	40	30	340	40
9.	अजमेर	दाहिरसेन नगर	210	50	60	320	30
10.	अजमेर/ब्यावर	विजय नगर	251	70	80	401	26
11.	भीलवाड़ा महा.	पथिक नगर	221	150	120	491	29
		देवनारायण	160	45	40	245	9
		सवाईभोज	165	40	50	255	30
12.	चित्तौड़	हाउसिंगबोर्ड	105	15	20	140	15
13.	चित्तौड़ निम्बाहेड़ा	निम्बाहेड़ा	250	60	100	410	22
14.	बीकानेर महानगर	जूनागढ़नगर	70	10	12	92	12
	कुल	**17**	**7414**	**1110**	**1812**	**6736**	**400**

सनसिटी कॉलम राइटर्स एंड स्कॉलर्स मीट कार्यक्रम

हम विविधता का उत्सव मनाते हैं- मनमोहन वैद्य

विश्व संवाद केंद्र जोधपुर प्रान्त द्वारा 2 अप्रैल को सनसिटी कॉलम राइटर्स एंड स्कॉलर्स मीट कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि डॉ. मनमोहन वैद्य ने कहा कि आज का भारत स्वतंत्रता का अमृत महोत्सव मना रहा है, ऐसे में लेखन के लिए शब्दों का समुचित चयन होना चाहिए, जैसे राष्ट्रवाद शब्द समुचित नहीं है, इसकी जगह राष्ट्रीय शब्द ही अपने आप में उपयुक्त है। कहा जाता है भारत विविधता में एकता का देश है, जबकि कहा जाना चाहिए कि हम विविधता का उत्सव मनाते हैं। इसी प्रकार हम राष्ट्रीय हैं, राष्ट्रवादी नहीं। हिंदू हैं, हिंदूवादी नहीं। हिन्दू वाद नहीं है। हिंदू मत है, परंपरा है।

दरअसल जहां से फासीवाद,नाज़ीवाद जैसे शब्द आते हैं उसी के अनुकरण में हम जातिवाद, हिंदूवाद जैसे शब्द लिखने लगते हैं,जबकि जाति भेद की जगह जाति व्यवस्था सही शब्द है। सत्र को संबोधित करते हुए दैनिक समाचार पत्र महानगर टाइम्स के संस्थापक सम्पादक गोपाल जी शर्मा ने कहा कि आज तक हमने वही इतिहास पढ़ा है, जो हमें पढ़ाया जाता रहा,अब जरूरत है इतिहास के सही तथ्य सामने लाए जाएं। इसके लिए अध्ययन की जरुरत है। जहाँ से सही तथ्य मिले, उनके आधार पर लिखें। कलम में तथ्य बताने का साहस होना ही चाहिए।

राजस्थान विश्वविद्यालय जयपुर में कला संकाय के डीन प्रोफेसर नंदकिशोर पांडे ने बताया कि समाज को जागरूक बनाने के लिए लेखन आवश्यक है। उन्होंनें कहा नई पुस्तकें आने पर पुरानी पुस्तकें स्वतः नेपथ्य में चली जाती हैं। नया विमर्श स्थापित करने के लिए बड़ा कथ्य स्थापित करना होगा। ताकत और सामर्थ्य जब बढ़ती है तो देश की बात दुनिया सुनती है। वर्ष 2023 को अंतरराष्ट्रीय मोटा अनाज वर्ष घोषित करना, विश्व योग दिवस मनाया जाना, ऐसे ही उदाहरण हैं। उन्होंने धर्म और वेदों के बारे में भी चर्चा की।

कार्यक्रम संयोजक सुनील बिश्नोई ने बताया कि कार्यक्रम में 90 विभिन्न अकादमिक श्रेणियों के प्रतिभागियों का चयन किया गया था जिनकी उपस्थिति शत प्रतिशत रही। कार्यक्रम के प्रारम्भ में प्राध्यापक श्रेणी के रतन सिंह, दिनेश चारण, डॉ. महेश कुमार धायल एवं शोधार्थी श्रेणी के गोविंद राम, रघुवीर सिंह और नीरज जोशी को उत्कृष्ट श्रेणी लेखन के लिए प्रशस्ति पत्र देकर सम्मानित किया गया। ●

जयपुर

शैक्षिक मंथन द्वारा 'भारत की अवधारणा' पर व्याख्यान

भारत एक जीवंत सांस्कृतिक इकाई - स्वांत रंजन

शैक्षिक मंथन संस्थान जयपुर की ओर से रविवार को भारत की अवधारणा विषय पर पाथेय भवन के नारद सभागार में एक व्याख्यान आयोजित किया गया। कार्यक्रम में मुख्य वक्ता श्री स्वांत रंजन,अखिल भारतीय बौद्धिक शिक्षण प्रमुख राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ ने अपने उद्बोधन में कहा कि भारत विश्व में ज्ञान की दृष्टि से सदैव श्रेष्ठ रहा है।

विविधता अवश्य परंतु सांस्कृतिक एकात्म भाव एक ही

स्वांत रंजन जी ने कहा कि इस सांस्कृतिक राष्ट्र में कई भाषाएं और उपासना पद्धतियां तो है लेकिन इसका सांस्कृतिक एकात्म भाव एक ही है। उन्होंने 'नेशन' और 'राष्ट्र' की अवधारणा को स्पष्ट करते हुए बताया कि वामपंथी विचार के लोगों ने भारत की सांस्कृतिक, आध्यात्मिक और ऐतिहासिक पुरातनता को हानि पहुंचाई है और इसके कर्म सिद्धांत, श्रम संस्कृति जैसे मौलिक आधार सूत्रों को कमतर आंका गया। उन्होंने कहा कि इतिहास क्रम से भारत में जनजातीय और वनवासी जीवन से नगर सभ्यताओं का विकास हुआ और धीरे-धीरे व्यवस्थित कृषि उन्नत हुई । उन्होंने जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी के महत्व को बताते हुए कहा कि भारत केवल एक जमीन का टुकड़ा नहीं अपितु एक जीवंत सांस्कृतिक इकाई है।

उन्होंने बताया कि मध्यकाल में कुछ आक्रांताओं के दबाव के कारण आई परंपरागत रूढ़ियों का दुष्प्रभाव आज भी भारत में दिखाई देता है । समय रहते समाज को उन्हें बदलना चाहिए । एक रूपक के माध्यम से उन्होंने स्पष्ट किया कि हमारा शरीर हमारा देश है, उस पर पहने जाने वाले विभिन्न रंगों के कपड़े उसके राज्य हैं और हमारी आत्मा भारत की संस्कृति है। इस तरह भारत राष्ट्र एक सांस्कृतिक इकाई है।

युवा पीढ़ी को दें सामाजिक समरसता के संस्कार

व्याख्यान में मुख्य अतिथि प्रदीप कुमार शेखावत, सूचना आयुक्त हरियाणा राज्य सूचना आयोग ने अपने उद्बोधन में बताया कि आज हमें युवा पीढ़ी में आचरण की शुद्धता के साथ उन्हें संस्कारवान बनाने की आवश्यकता है। सामाजिक समरसता तथा समानता का भाव विस्तार करना चाहिए । यही समृद्ध राष्ट्र की नींव हो सकती है । आज हमें संस्कार शिक्षा की महती आवश्यकता है।

'बहुजन हिताय' की अपेक्षा 'सर्वजन हिताय'

व्याख्यान माला की अध्यक्षता करते हुए जगदीश प्रसाद सिंघल, अध्यक्ष अखिल भारतीय राष्ट्रीय शैक्षिक महासंघ ने कहा कि भारत की सांस्कृतिक और राष्ट्रीय एकात्मता के कारण ही आज भारत विभिन्न क्षेत्रों में नई ऊंचाइयां छू रहा है । भारत की प्राचीनता व आध्यात्मिकता के कारण आज भारत विश्व में पहचाना जाने लगा है । हमारी 'बहुजन हिताय' की अपेक्षा 'सर्वजन हिताय' की दृष्टि रही है । यह समय भारत की त्यागमयी विश्वबंधुत्व की विशिष्ट संस्कृति की पुनर्स्थापना का समय है।

व्याख्यान को सुनने के लिए शिक्षा जगत से प्रत्यक्ष-परोक्ष रूप से जुड़े गणमान्य लोग बड़ी संख्या में उपस्थित थे। सभागार खचाखच भरा हुआ था।

इस अवसर पर पाथेय कण संस्थान की ओर से पाथेय कण के संपादक रामस्वरूप अग्रवाल, प्रबंध संपादक माणकचंद, सचिव महेंद्र सिंघल एवं सह प्रबंध संपादक ओम प्रकाश ने अतिथियों के कर कमलों से पाथेय कण के 'सेवा-स्वावलम्बन' विशेषांक का विमोचन कराया।

देवर्षि नारद पत्रकार सम्मान समारोह-2023

विश्व संवाद केन्द्र द्वारा 'नारद जयंती' को पत्रकार दिवस के रूप में मनाया जाता है। इस दिन पत्रकारिता के विभिन्न क्षेत्रों प्रिन्ट, इलेक्ट्रॉनिक चैनल, पोर्टल, सोशल मीडिया, ब्लॉग, फोटो व कार्टून विधा आदि में उत्कृष्ट कार्य कर रहे पत्रकारों को नारद सम्मान से सम्मानित किया जाता है। इसी क्रम में विश्व संवाद केन्द्र की ओर से आयोजित जयपुर प्रान्त का कार्यक्रम इस बार अलवर में 7 मई को तथा चितौड़ प्रान्त का 14 मई को अजमेर में रखा गया।

गुवाहाटी

डीलिस्टिंग मांग को लेकर 60 हजार लोग हुए इकट्ठे

जनजाति समाज से जो मतांतरित हुए है, उनका जनजाति सूची से नाम हटाया जाए और उन्हें आरक्षण सहित किसी भी प्रकार का लाभ ना मिले। जनजाति समाज पर हो रहे इस अन्याय के लिए बहुत बड़ी संख्या में सभी जनजाति बंधु अब जाग गए हैं।

डीलिस्टिंग की मांग को लेकर जनजाति धर्म संस्कृति सुरक्षा मंच, असम द्वारा बीती 26 मार्च को गुवाहाटी के खानपाड़ा मैदान में 60 हजार से अधिक जनजाति बंधुओं ने विशाल जन सभा का आयोजन किया। सभा का मानना था कि ऐसा करने से जनजाति समाज की धर्म-संस्कृति पर हमला हुआ है। मंच के अखिल भारतीय संगठन मंत्री सूर्यनारायण सूरी का कहना था कि वास्तव में जिन्हें लाभ मिलना चाहिए था वे तो वंचित हैं, यह अन्याय अब हम सहन नहीं करेंगे। पूर्व में भी कार्तिक उरांव ने यही मांग संसद में रखी थी और इस हेतु गठित समिति ने इसका समर्थन भी किया था। दुर्भाग्य से आज तक इस विषय की ओर किसी ने ध्यान नहीं दिया।

हम मतांतरित ईसाई एवं मुसलमानों के नाम सूची से हटा कर ही रहेंगे।

पटना

भारतीय मजदूर संघ

राष्ट्रीय श्रमनीति के लिए जिला केन्द्रों पर होंगे सामूहिक प्रदर्शन

न्यूनतम मजदूरी के स्थान पर जीविका मजदूरी देने, आर्थिक विकास के लिए राष्ट्रीय श्रमनीति बनाने, सामाजिक सुरक्षा का लाभ देने एवं ठेका प्रथा बंद करने की मांग को लेकर आगामी 26 अप्रैल को देशभर के सभी जिला केन्द्रों पर सामुहिक धरना-प्रदर्शन किया जाएगा। यह कहना है बीएमएस के संगठन मंत्री वी.सुरेन्द्रन का।

हिरण्मय पंड्या

रवीन्द्र हिमते

बीती 9 से 11 अप्रैल के मध्य पटना में आयोजित भारतीय मजदूर संघ के 20वें अखिल भारतीय अधिवेशन के दौरान मजदूर हितों को लेकर उक्त चार प्रस्ताव पारित हुए। आगामी 3 वर्षो के लिए नवीन कार्यकारिणी का गठन करते हुए हिरण्मय पंड्या को बीएमएस का राष्ट्रीय अध्यक्ष और रवीन्द्र हिमते को महामंत्री नियुक्त किया गया।

झालावाड़

भारतीय किसान संघ ने की खराब हुई फसल के लिए मुआवजे की मांग

पिछले दिनों हुई बेमौसम बारिश व ओलावृष्टि किसानों के लिए कहर बन कर आई। अनेक किसानों की पूरी फसल ही चौपट हो गई। तब से ही भारतीय किसान संघ किसानों को उचित मुआवजा दिए जाने की मांग कर रहा है, लेकिन कोई सुनवाई न होने पर अब किसान प्रदर्शन के लिए बाध्य हो गए हैं। भारतीय किसान संघ जिला झालावाड़ के जिला अध्यक्ष धन सिंह गुर्जर की अगुवाई में किसानों ने रैली निकाली और जिला कलेक्टर, कृषि मंत्री व प्रधानमंत्री के नाम ज्ञापन सौंपा। इस अवसर पर प्रांतीय उपाध्यक्ष रघुनाथ सिंह ने कहा कि आपदा प्रबंधन एवं प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना की राशि का समायोजन करना गलत है, दोनों अलग-अलग मिलने चाहिए।

किडनी कैंसर क्या है ?

● डॉ.हर्ष गोयल

किडनी या गुर्दे की सामान्य कोशिकाएं जब कैंसर कोशिकाओं में परिवर्तित हो जाती है तो इसे किडनी का कैंसर कहा जाता है। एक सर्वे के अनुसार वर्ष 2020 में विश्व में 4 लाख से अधिक नए मरीज किडनी कैंसर के पाये गये और लगभग 2 लाख मरीजों की इस रोग से मृत्यु हो गयी थी ।

इसी प्रकार भारत में किडनी कैंसर की स्थिति को लेकर हुए एक सर्वे के अनुसार वर्ष 2020 में 16,861 नए किडनी कैंसर से ग्रसित हुए थे जिसमें से 9,897 लोगों की उपचार के दौरान मृत्यु हो गई थी ।

कारण

- मुख्य रूप से यह 60 से 80 वर्ष की उम्र में ज्यादा होता है ।
- किडनी कैंसर का मुख्य कारण तंबाकू है ।
- ज्यादा वसा युक्त भोजन व मोटापा भी किडनी कैंसर का कारण बन सकता है ।
- अन्य कारणों में जेनेटिक (परिवार में किसी को पहले हुआ हो) कारण शामिल है।
- लंबे समय तक उच्च रक्तचाप (हाई बीपी) रहना।
- किडनी का लंबे समय तक डायलिसिस होना।

यह पुरुषों में महिलाओं की तुलना में अधिक होता है।

लक्षण

- पेशाब में खून आना
- पेशाब करने में दर्द का होना
- पेट में दर्द का होना
- पेट में गठान का होना (पेट के साइड की ओर) और बुखार का आना
- भूख ना लगना
- वजन कम हो जाना

कैंसर की जांच

पेशाब की जांच, पेट की सोनोग्राफी और बायोप्सी से गठान के बारे में पता लगाया जाता है। अन्य जाचों में सीटी स्कैन, एमआरआई, पेट स्कैन या बोन स्केन शामिल है ।

ऐलोपैथी में किडनी कैंसर का मुख्य उपचार सर्जरी है। ऑपरेशन के माध्यम से गठान को बाहर निकाल दिया जाता है। अन्य उपचारों में इम्यूनोथेरेपी, कीमोथेरेपी, रेडियोथैरेपी शामिल है।

किडनी कैंसर से बचाव कैसे करें

1. हेल्दी डाइट लें, खाने में वसा युक्त भोजन से बचें।
2. तंबाकू और शराब से दूर रहें।
3. नियमित एक्सरसाइज करें।
4. उच्च रक्तचाप से बचें।
5. तनाव से बचें ।
6. पेशाब में किसी भी तरह के असामान्य लक्षण दिखने पर अपने चिकित्सक से परामर्श जरूर लें।

–(लेखक कोटा में कैंसर रोग विशेषज्ञ हैं)

जोधपुर

संबोधि धाम में धूमधाम से सम्पन्न हुआ सामूहिक वर्षीतप पारणा–महोत्सव

भरत की तरह राजमहल में रहते हुए तप–त्याग का जीवन कठिन

देश भर से आए हजारों श्रद्धालुओं के बीच जोधपुर की कायलाना रोड़ स्थित प्रसिद्ध साधना स्थली संबोधि धाम में अक्षय तृतीया के पावन पर्व पर सामूहिक वर्षीतप पारणा महोत्सव का आयोजन हुआ। महोपाध्याय ललितप्रभ सागर महाराज एवं पूज्य संत चन्द्रप्रभ महाराज के सान्निध्य में आयोजित इस महोत्सव में सर्वप्रथम अष्टापद मंदिर में विराजमान आदिनाथ भगवान की दिव्य प्रतिमा का अभिषेक महापूजन किया गया।

इस अवसर पर संत ललितप्रभ ने वर्षीतप आराधकों की अनुमोदना करते हुए तपस्वियों का इंटरव्यू लिया। उन्होंने अपनी वर्षभर की तपस्या से जुड़े हुए खट्ठे–मीठे अनुभव सुनाए तो सभी लोग अभिभूत हो उठे।

संत चन्द्रप्रभ ने तपस्वियों को गृहस्थ संत की उपमा देते हुए कहा कि राम की तरह वनवासी का जीवन जीना सरल है, पर भरत की तरह राजमहलों में रहते हुए भी तप–त्याग का जीवन जीना बहुत कठिन है। उन्होंने कहा कि हम तपस्या के साथ मन में पलने वाली वैर–विरोध की गांठों का भी त्याग करें। जब हम पुराना कैलेण्डर घर में नहीं रखते तो पुरानी बातों को मन में क्यों ढोते रहते हैं?

दिल्ली

सेवा के लिए सम्मान

जयपुर के मेजर सुरेन्द्र नारायण माथुर को दिल्ली के विज्ञान भवन में संत ईश्वर सम्मान–2022 से सम्मानित करते हुए स्वामी अवधेशानंद गिरि जी एवं केन्द्रीय मंत्री मीनाक्षी लेखी (संत ईश्वर फाउंडेशन एवं राष्ट्रीय सेवा भारती द्वारा)

जयपुर

सेवा–स्वावलम्बन अंक का विमोचन

पाथेय कण के सेवा–स्वावलम्बन अंक का विमोचन संघ के अखिल भारतीय बौद्धिक शिक्षण प्रमुख स्वांत रंजन जी एवं अन्य अतिथियों द्वारा। (फोटो- राजेश कुमावत)

कोटा

मातृशक्ति के बढ़ते कदम

वर्ष प्रतिपदा पर राष्ट्र सेविका समिति (कोटा विभाग) की ओर से निकाले गए पथ संचलन में कदम से कदम मिलाती मातृशक्ति

गोगुन्दा, उदयपुर

'मेरी धरोहर–मेरी शान' अभियान

गोगुन्दा (उदयपुर) की ऐतिहासिक बावड़ी को श्रमदान कर गंदगी मुक्त करते हुए पर्यावरण कार्यकर्ता।

उदयपुर

पर्यावरण बचाने के लिए परिंडा अभियान

उदयपुर में व्यापक स्तर पर लगाए गए परिंडे।

जयपुर

सूचना आयुक्त बनने पर अभिनन्दन

पाथेय कण संस्थान की कार्यकारिणी के सदस्य तथा पाथेय कण (पाक्षिक) के सम्पादक मंडल में सदस्य रहे श्री प्रदीप शेखावत के सूचना आयुक्त (हरियाणा) बनने पर संस्थान के सचिव महेन्द्र कुमार सिंघल, पाथेय कण के प्रबंध संपादक माणकचंद एवं संपादक रामस्वरूप द्वारा अभिनन्दन। (फोटो- राजेश कुमावत)

श्रीकृष्ण कहते हैं–

गीता दर्शन

शक्नोतीहैव यः सोढुं प्राक्शरीरविमोक्षणात्।

कामक्रोधोद्भवं वेगं स युक्तः स सुखी नरः।। (5/23)

हे अर्जुन ! जो साधक इस मनुष्य शरीर का नाश (त्यागने से पूर्व) होने से पहले ही काम–क्रोध आदि से उत्पन्न होने वाले वेग (इन्द्रियों का वेग) को सहन करने में समर्थ हो जाता है, वही पुरुष योगी है और वही इस संसार में सुखी रह सकता है।

आओ संस्कृत सीखें - 18

संस्कृत	हिंदी
● मया न दातव्यम् आसीत्।	मुझे नहीं देना चाहिए था।
● सुन्दरं करणीयम् आसीत्।	अच्छा करना चाहिए था।

गौरव के क्षण

- इसरो(भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन) ने मिशन चन्द्रयान–3 के अंतर्गत सीई–20 क्रायोजेनिक इंजन का सफल परीक्षण महेन्द्रगिरी (तमिलनाडु) में किया।
- भारतीय मूल के प्रो. हरि बालाकृष्णन को वायरलैस नेटवर्किंग, मोबाइल सैंसिंग, डिस्ट्रीब्यूटेड सिस्टम में मौलिक खोज के लिए संचार प्रौद्योगिकी क्षेत्र के शीर्ष पुरस्कार 'मार्कोनी पुरस्कार–2023' से सम्मानित किया गया।
- भारतीय वायु सेना की ग्रुप कैप्टन शालिजा धामी लड़ाकू इकाई की कमान संभालने वाली पहली महिला अधिकारी बनी है।

तथ्य

- **विश्व बैंक और आईएमएफ के अनुसार पिछले 50 वर्ष में पहली बार ऐसा हो रहा है जब विश्व के करीब 53 देश देनदारी में दिवालिया होने के करीब हैं।**
- **स्मार्टफोन, हाईपावर म्यूजिक सिस्टम और ईयरफोन के बढ़ते उपयोग से युवाओं में बहरापन बढ़ा। डब्ल्यूएचओ के अनुसार विश्व के लगभग 150 करोड़ लोग सुनने की समस्याओं से जूझ रहे हैं।**

परखवाड़े का कथन

अभी भारत की जो स्थिति है, वह कभी नहीं रही। इस वक्त वह पहले से ज्यादा ताकतवर है। जी–20 देशों में भी जो अहमियत इस समय है, वैसी कभी नहीं हुई। विदेशी ताकतों के पास अब भारत को साथ लेकर चलने के सिवा कोई विकल्प नहीं हैं। विदेश नीति के मामले में भी वह ज्यादा सुलझा हुआ है।

***–टोनी ब्लेयर,** पूर्व प्रधानमंत्री, ब्रिटेन*

(3 मार्च, 2023 रायसीना डॉयलॉग, दिल्ली)

हिन्दू धर्म की विशेषता

हिन्दू धर्म की विशेषता यह है कि यह एक मानव निर्मित ऐतिहासिक धर्म नहीं है, जो किसी चर्च, उद्धारकर्ता या पैगम्बर पर निर्भर है, या किसी विश्वास या हठधर्मिता का प्रचार करता है; हिन्दू धर्म पृथ्वी और प्रकृति से तथा हमारी अंतः चेतना से उत्पन्न होता है और हमें अपने भीतर पूरे ब्रह्माण्ड को समाहित करने की अनुमति देता है।

– डॉ.डेविड फ्रॉली

प्रसिद्ध अमेरिकी लेखक, विचारक

जांचें कि आप कितने ज्ञानवान हैं?

नीचे दिए गए 10 प्रश्नों के उत्तर बताइए। अपना ज्ञान स्तर निम्नानुसार मानें –

सामान्य– यदि आप 5 प्रश्नों के सही उत्तर देते हैं। **श्रेष्ठ–** यदि 8 प्रश्नों के सही उत्तर देते हैं। **उत्तम –** यदि सभी उत्तर सही देते हैं।

1. क्रांतिकारी दामोदर हरि, वासुदेव और बालकृष्ण तीनों भाई भारतीय इतिहास में किस नाम से विख्यात है?
2. क्रांतिकारियों द्वारा स्थापित 'गदर पार्टी ' के प्रथम महामंत्री कौन थे?
3. नोआखाली (बांग्लादेश) नरसंहार के समय मुस्लिम दंगाइयों ने किस क्रांतिकारी की हत्या कर दी थी?
4. महान क्रांतिकारी सूर्य सेन को किस स्थान पर फांसी दी गई थी?
5. क्रांतिकारी विपिन चन्द्र पाल की स्मृति में भारत सरकार ने किस वर्ष डाक टिकट जारी किया?
6. शिवराम हरि राजगुरु को क्रांतिकारी दल के सभी सदस्य किस नाम से जानते थे?
7. खुदीराम बोस मात्र 19 वर्ष की उम्र में फांसी पर चढ़ गए थे। उस समय उनके हाथ में कौन सा पवित्र ग्रंथ था?
8. 'मैं अपनी झांसी नहीं दूंगी' उक्त उद्घोष किस वीरांगना के द्वारा किया गया था?
9. स्वाधीन भारत की पहली महिला राज्यपाल बनने वाली स्वतंत्रता सेनानी कौन थीं?
10. अंग्रेजों की 'राज्य हड़प नीति' के विरुद्ध सशस्त्र संघर्ष करने वाली कर्नाटक की रानी कौन थीं?

उत्तर – पृष्ठ 21 पर

गांव में डेढ घंटे का डिजिटल डिटॉक्स

महाराष्ट्र के मोहित्याचे वडगांव में हर रोज शाम ठीक सात बजे मंदिर में एक सायरन बजता है और तुरंत ही गांव के सारे लोग डिजिटल उपकरणों को किनारे रखकर किसी और काम में लग जाते हैं। दरअसल यह गांव हर रोज डेढ़ घंटे का डिजिटल डिटॉक्स (खुद को स्क्रीन की दुनिया से दूर रखना) करता है और इस दौरान कोई भी फोन, टीवी, लैपटॉप आदि पर काम नहीं करते हैं, बल्कि लोग एक-दूसरे से बातें करते हैं, कुछ साहित्य पढते हैं या दूसरे किसी काम में व्यस्त हो जाते हैं। गांव के सरपंच विजय मोहिते की इस पहल का गांव के सभी लोग ईमानदारी से पालन कर रहे हैं।

साभार-द बेटर इंडिया, बेंगलुरु

कैंसर को बढ़ावा देता प्लास्टिक-डिस्पोजल

एफडीए (फूड एंड ड्रग प्रशासन, अमरीका) के एक सर्वे के अनुसार गर्म खाने को प्लास्टिक की प्लेट,पॉलीथीन या डिब्बे में रखने से 55-60 प्रकार के हानिकारक रसायन

निकलते हैं। जो भोजन के साथ शरीर में पहुँचकर हार्मोन्स को असंतुलित करते हैं। एक आंकडे के अनुसार रेस्टोरेंट में फूड पैकेजिंग के लिए 43% सिंगल यूज प्लास्टिक का उपयोग होता है जो कि स्वास्थ्य के लिए बहुत ही हानिकारक है।

कम उम्र में मोबाइल से बहलाना है खतरनाक

लंदन के ब्रेन इंजरी एक्सपर्ट और न्यूरो साइकोलॉजिस्ट डॉ.अल्वारो बिलबाओ ने अपने शोध के पश्चात् बताया कि 6 वर्ष से कम उम्र में मोबाइल की स्क्रीन के संपर्क में आने वाले बच्चे

स्वभाव से चिड़चिड़े होते हैं, उनमें एकाग्रता की कमी होती है, उनकी याददाश्त कमजोर हो जाती है, वे अपनी रूचि को पहचान नहीं पाते, जैसी अनेक समस्याएं पैदा होती हैं, जो कि उनके व्यक्तित्व विकास में बड़ी बाधक है।

घरेलू नुस्खा

घर में मच्छर और कीड़ों को भगाने के लिए थोड़ा-सा कपूर शाम के समय जलाएं। कुछ देर में मच्छर-मक्खी आदि दूर हो जाएंगे। ऐसा भी माना जाता है कि शाम के समय घर में कपूर जलाने से घर की नकारात्मक ऊर्जा भी दूर होती है।

कुकिंग टिप्स

दही जमाने के लिए जामन नहीं है, तो गुनगुने दूध में एक हरी मिर्च डालकर रखने से भी दही तैयार हो जाता है।

उत्तर स्वातंत्र्य समर प्रश्नोत्तरी :- 1. चाफेकर बंधु 2. लाला हरदयाल 3. लालमोहन सेन 4. चटगांव जेल 5. 1958 6. रघुनाथ 7. श्रीमद्भगवतगीता 8. रानी लक्ष्मीबाई 9. सरोजनी नायडू 10. रानी चेन्नमा

प्रेरक कथा

मेरे पास इतने पैसे नहीं कि दान कर सकूं

एक बुजुर्ग शिक्षिका भीषण गर्मियों के दिनों में बस में सवार हुई, पैरों के दर्द से बेहाल, लेकिन बस में सीट न देख कर जैसे-तैसे खड़ी हो गई। कुछ दूरी ही तय की थी बस ने कि एक उम्र दराज महिला ने बड़े सम्मानपूर्वक आवाज दी, ''आ जाइए मैडम, आप यहां बैठ जाइए।'' यह कहते हुए उसने उन्हें अपनी सीट पर बिठा दिया। मैडम ने दुआ दी, ''बहुत बहुत धन्यवाद, मेरी बुरी हालत थी सच में।''

उस गरीब महिला के चेहरे पर अब एक सुकून भरी मुस्कान फैल चुकी थी।

कुछ देर बाद शिक्षिका के पास वाली सीट खाली हो गई। लेकिन महिला ने एक और महिला को, जो एक छोटे बच्चे के साथ यात्रा कर रही थी और मुश्किल से बच्चे को ले जाने में सक्षम थी, को सीट पर बिठा दिया।

अगले पड़ाव पर बच्चे के साथ महिला भी उतर गई, सीट खाली हो गई, लेकिन नेक दिल महिला ने बैठने का लालच नहीं किया, बस में चढ़े एक कमजोर बूढ़े आदमी को बिठा दिया जो अभी-अभी बस में चढ़ा था।

सीट फिर से खाली हो गई। बस अब गिनती की सवारियाँ रह गई थीं। अब उस अध्यापिका ने महिला को अपने पास बिठाया और पूछा, ''सीट कितनी बार खाली हुई है, लेकिन आप अन्य लोगों को ही बिठाती रही, खुद क्यों नहीं बैठी, क्या बात है?''

महिला ने कहा,''मैडम, मैं एक मजदूर हूं, मेरे पास इतने पैसे नहीं हैं कि मैं कुछ दान कर सकूं।''

''मैं क्या करती हूं कि रास्ते में कोई पत्थर पड़ा हो तो उसे उठाकर एक तरफ रख देती हूं, कभी बस में किसी के लिए सीट छोड़ देती हूँ, कभी किसी प्यासे को पानी पिला देती हूँ फिर जब सामने वाला मुझे दुआएं देता है तो मैं अपनी गरीबी भूल जाती हूँ। दिन भर की थकान दूर हो जाती है।''

''और तो और, जब मैं दोपहर में रोटी खाने बाहर बैंच पर बैठती हूँ तो चिड़ियां पास आकर बैठ जाती हैं, रोटी डाल देती हूँ छोटे-छोटे टुकड़े करके। जब वे खुशी से चिल्लाती हैं तो भगवान के जीवों को देखकर मेरा पेट भर जाता है। पैसा-धेला न सही, सोचती हूं दुआएं तो मिल ही जाती हैं ना मुफ्त में। फायदा ही है ना, और हमने लेकर भी क्या जाना है यहाँ से?''

शिक्षिका आवाक रह गई, एक अनपढ़ सी दिखने वाली महिला इतना बड़ा पाठ जो पढा गई थी उसे। अगर दुनिया में आधे लोग भी ऐसी सोच को अपना लें तो धरती स्वर्ग बन जाएगी।

बोध कथा

आम का पेड़

एक वृद्ध व्यक्ति रास्ते में छोटा-सा पौधा रोप रहा था। वहाँ से गुजरते राजा ने उससे पूछा कि आप कौन सा पौधा लगा रहे हो? वृद्ध बोला, आम का पौधा लगा रहा हूँ।

राजा कुछ देर सोचता रहा और फिर बोला कि इस पौधे को बड़े होने और फल आने में कई साल लग जाएंगे। तब तक क्या तुम जीवित रहोगे? राजा को लग रहा था कि वृद्ध ऐसा काम कर रहा है जिसका फल उसे नहीं मिलेगा।

इस पर वृद्ध ने राजा को जवाब दिया कि आपको लग रहा होगा कि मैं पागलपन कर रहा हूँ। जिस चीज से स्वयं को फायदा न हो उस पर मेहनत करना बेकार है। लेकिन जरा यह सोचिए कि मैंने दूसरों के लगाए पेड़ों के कितने फल खाए हैं? क्या उस कर्ज को उतारने के लिए मुझे कुछ करना चाहिए? क्या मुझे इस भावना से पेड़ नहीं लगाना चाहिए कि उनके फल दूसरे लोग खा सकें? राजन जो केवल अपने लाभ के लिए काम करता है, वह स्वार्थी वृत्ति का मनुष्य होता है। वृद्ध की यह बात सुनकर राजा को बड़ी सीख मिली।

सही छाया खोजिए

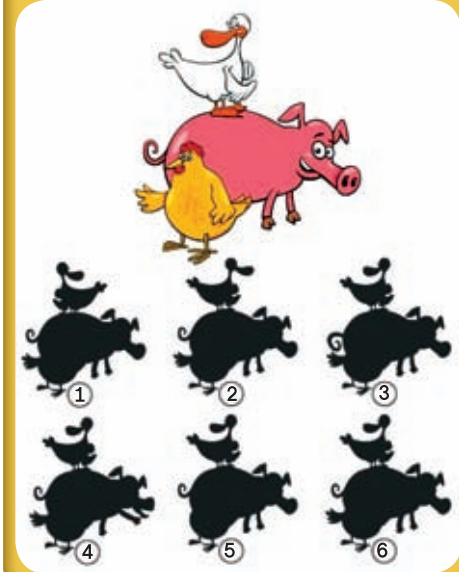

उत्तर : 9

बाल प्रश्नोत्तरी -33 के परिणाम

1. विद्या सैनी, मालपुरा, टोंक
2. वैभव अग्रवाल, नदबई, भरतपुर
3. तेनेश हिंदू,खींवसर,नागौर
4. आर्यन छापरवाल, गुलाबपुरा, भीलवाड़ा
5. नैवेध गर्ग, तलवंडी, कोटा
6. निर्भय सिंह, झोटवाड़ा, जयपुर
7. चिराग बंसल, कालाकुआँ,अलवर
8. एकता सोनी,गांधी कॉलोनी,जैसलमेर
9. हर्षित वैष्णव, अटरू, बारां
10. तेजस गुप्ता, कोटा

बाल प्रश्नोत्तरी -34 के परिणाम

1. एंजल रावत, आदर्श नगर, अजमेर
2. लनी गुप्ता, मंदसौर, मध्यप्रदेश
3. विवेक खटीक, मावली किला, उदयपुर
4. सुनिधि अरोड़ा, श्रीगंगानगर
5. गणेश बागड़ा,वीकेआई, जयपुर
6. शिवानी, रकपुरा, उदयपुर
7. चन्द्रप्रकाश, कोटा रोड, ईटावा
8. पंकज अग्रवाल, अजमेर
9. अरुण जांगिड़, मालपुरा,टोंक
10. भव्या गुर्जर, आहोर, जालोर

बाल प्रश्नोत्तरी -35 के परिणाम

1. आदित्य जोशी, बड़ी सादड़ी, चित्तौड़गढ़
2. सरस्वती पुरोहित,रानीवाड़ा, जालौर
3. ऐंजल छीपा, चांदपोल, जयपुर
4. गर्वित नेहरिया, पाठों की मगरी,उदयपुर
5. राघव गोस्वामी, मांगरोल, बारां
6. मिली सिंह, आदर्श नगर, अजमेर
7. पायल सुमन,डीसीएम रोड, कोटा
8. सुनिधि अरोड़ा, रायसिंहनगर, श्रीगंगानगर
9. हनुमान माली, मालपुरा, टोंक
10. मनीषा सिद्ध, सरदार शहर, चुरु

रसायन विज्ञान के रोचक तथ्य

- दुनिया में सबसे ज्यादा कठोर धातु प्लैटिनम है।
- पृथ्वी की ऑक्सीजन का 20% हिस्सा अमेजन (दक्षिण अमेरिका) के जंगल से प्राप्त होता है।
- उड़ने वाले गुब्बारों में हीलियम गैस भरी जाती है, क्योंकि यह वायु से भी हल्की होती है। आजकल हीलियम गैस का उपयोग हवाईजहाज के टायर में भी किया जाता है।
- हथेली पर रखने भर से गैलियम नामक धातु पिघल जाती है, क्योंकि इसका गलनांक केवल 29.76^{0}C होता है। यह तापमान के प्रति बहुत संवेदनशील होता है।
- पेट में हाइड्रोक्लोरिक एसिड पाया जाता है, जो स्टील को भी गला सकता है।
- तांबे यानी कॉपर पर बैक्टीरिया नहीं लग सकते हैं।
- मानव शरीर में बड़ी मात्रा में कार्बन पाया जाता है, इतना कि इससे 9 हजार ग्रेफाइट की पेंसिल बनाई जा सकती है।

राष्ट्रनायक सुभाष चन्द्र बोस 40

आलेख एवं चित्र
ब्रजराज राजावत

अंडमान–निकोबार में नेताजी द्वारा फहराया गया तिरंगा आगे मिलने वाली सफलताओं का उद्‌घोष कर रहा था। आजाद हिन्द फौज का हर सैनिक युद्ध के लिए आतुर था। नेताजी ने अब अपनी सरकार का मुख्यालय भारत के समीप रंगून (बर्मा) में बना लिया तो भारत के लोगों का उत्साह चरम पर था।... 4 फरवरी, 1944 को आजाद हिन्द फौज ने अराकान में युद्ध प्रारम्भ कर दिया...

18 मार्च, 1944 को आजाद हिन्द सेना ने बर्मा की सीमा पार कर भारत की सीमा में प्रवेश किया तो सिपाहियों की खुशी देखने लायक थी...

आजाद हिन्द सेना व जापानी सेना संयुक्त रूप से सफलता के साथ बढ़ती रही... शीघ्र ही इंफाल–कोहिमा राजमार्ग पर कब्जा कर लिया, जंगल से ब्रिटिश सेना भाग खड़ी हुई अब मैदानी क्षेत्र में आजाद हिन्द सेना को टैंक व तोपों से रोकने का प्रयास हुआ... संघर्ष तेज हो गया।

पाक्षिक
पाथेय कण
1-15 मई, 2023
(26 अप्रैल का प्रकाशित, पृष्ठ 24)

आर.एन.आई.पंजीयन क्र. 48760/87
डाक पंजीयन संख्या JAIPUR CITY /202/2021-23

अग्रिम शुल्क बिना प्रेषण की अनुमति लाइसेंस संख्या
JAIPUR CITY/ WPP - 01/2021-23

आगामी पक्ष के विशेष अवसर

(16 से 31 मई, 2023)
ज्येष्ठ कृष्ण 12 से ज्येष्ठ शुक्ल 11 तक, वि.सं.-2080

जन्म दिवस

ज्येष्ठ कृ.12 (16 मई) - सम्राट पृथ्वीराज चौहान जयंती
ज्येष्ठ कृ.12 (16 मई) - 14वें तीर्थंकर अनन्तनाथ जयंती
ज्येष्ठ कृ.14 (18 मई) - 16वें तीर्थंकर शांतिनाथ जयंती
19 मई (1917) - 19वें लामा कुशोक बकुला रिनपोछे जयंती
22 मई (1772) - राजा राममोहन राय जयंती
ज्येष्ठ शु.3 (22 मई) - महाराणा प्रताप जयंती, वीर छत्रसाल जयंती
25 मई (1886) - रासबिहारी बोस जयंती
28 मई (1883) - वीर विनायक दामोदर सावरकर जयंती
ज्येष्ठ शु.11 (31 मई) - गायत्री जयंती
31 मई (1725) - अहिल्या बाई होल्कर जयंती

बलिदान दिवस/पुण्यतिथि

16 मई (1665) - मुरारबाजी देशपांडे का बलिदान
17 मई (1933) - अण्डमान में क्रांतिकारी महावीर सिंह का बलिदान
ज्येष्ठ शु.4 (23 मई) - 5वें गुरु अर्जुन देव का बलिदान (प्राचीन मत)
24 मई (1918) - प्रताप सिंह बारहठ का बलिदान
26 मई (1934) - क्रांतिकारी चम्पक रमण पिल्लई का बलिदान
29 मई (1939) - हैदराबाद सत्याग्रह में नन्हू सिंह का बलिदान

महत्वपूर्ण घटनाएं/अवसर

17 मई (1877) - प्रथम सर्वेक्षक पं.नैनसिंह रावत सम्मानित
18 मई (1974) - भारत ने प्रथम परमाणु परीक्षण किया
28 मई (1857) - नसीराबाद छावनी से राजस्थान में स्वतंत्रता संग्राम प्रारंभ
ज्येष्ठ शु. 10 (30 मई) - सेतुबंध रामेश्वर प्रतिष्ठा दिवस
30 मई - हिन्दी पत्रकारिता दिवस
31 मई - विश्व तम्बाकू निषेध दिवस

सांस्कृतिक पर्व/त्योहार

ज्येष्ठ शुक्ल 10 (30 मई) - गंगा दशहरा (हरिद्वार)

पंचांग -ज्येष्ठ (कृष्ण-पक्ष)

युगाब्द-5125, वि.सं.-2080, शाके-1945
(6 से 19 मई,2023 तक)

चतुर्थी व्रत- 8 मई , **पंचक प्रारम्भ** - 12 मई (रात 12.18 बजे से), **अपरा एकादशी व्रत (स्मार्त, वैष्णव)**-15 मई, **अपरा एकादशी व्रत (निम्बार्क)**-16 मई, **प्रदोष व्रत** -17 मई, **वट सावित्री व्रत प्रारम्भ (तीन दिवसीय)**-17 मई, **पंचक समाप्त** - 17 मई (प्रातः 7.39 बजे तक) **देवपितृकार्य अमावस्या (बड़ पूजन)**-19 मई

ग्रह स्थिति

चन्द्रमा : 6 मई को **तुला** राशि में, 7-8 मई नीच की राशि **वृश्चिक** में, 9-10 मई **धनु** राशि में, 11-12 **मकर** राशि में, 13-14 मई **कुंभ** राशि में, 15 से 17 मई **मीन** राशि में तथा 18-19 मई को **मेष** राशि में गोचर करेंगे।

ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष में **गुरु** व **शनि** यथावत मेष व कुंभ राशि में स्थित रहेंगे। इसी प्रकार **राहु** व **केतु** भी क्रमशः पूर्ववत मेष व तुला राशि में स्थित रहेंगे। **शुक्र** भी पूर्ववत मिथुन राशि में गतिमान रहेंगे। **सूर्य** 15 मई को दोपहर 11.45 बजे मेष से वृष राशि में प्रवेश करेंगे। **मंगल** 10 मई को दोपहर 1.48 बजे मिथुन से कर्क राशि में प्रवेश करेंगे। **वक्री बुध** 15 मई को प्रातः 8.47 बजे मेष राशि में रहते हुए मार्गी होंगे।

जन्मदिवस पर शत शत नमन

16वें जैन तीर्थंकर
शांतिनाथ जी
ज्येष्ठ कृ.14 (18 मई)

बुंदेलखण्ड केसरी
वीर छत्रसाल
ज्येष्ठ शुक्ल 3 (22 मई)

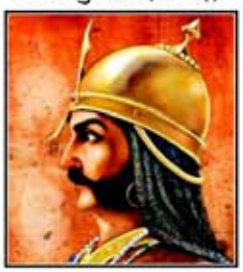

प्रसिद्ध क्रांतिकारी
रासबिहारी बोस
25 मई

स्वत्वाधिकारी पाथेय कण संस्थान के लिये प्रकाशक एवं मुद्रक माणक चन्द
द्वारा कुमार एण्ड कम्पनी,ए-10,22 गोदाम औद्योगिक क्षेत्र, जयपुर से मुद्रित
प्रकाशकीय कार्यालयः पाथेय भवन, 4, मालवीय संस्थानिक क्षेत्र, मालवीय नगर, जयपुर-302017
सम्पादक - रामस्वरूप अग्रवाल
प्रेषण दिनांक 1,2,3,4 व 5 मई, 2023 आर.एम.एस.(पी.एस.ओ.) जयपुर

प्रतिष्ठा में